राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के अनुरूप तैयार

हिंदी में परास्नातक पाठ्यक्रम

शिक्षण सत्र 2024-2025 से प्रभावी

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, दोइमुख, ईटानगर- 791112

परास्नातक कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम प्रारूप (राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020)

1.0. प्रस्तावना

पाठ्यक्रम निर्माण समिति (BoS) हिंदी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुपालन में इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। इस पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात हिंदी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सकेंगे कि साहित्य का अध्ययन कैसे किया जाए, उसकी समीक्षा कैसे की जाए और दिए गए पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए ताकि विद्यार्थी, साहित्य के उद्देश्य से भली-भाँति परिचित हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुरूप स्नातक (UG) और परास्नातक (PG) दोनों स्तरों पर पुनर्गठित उपाधिकार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार स्नातक उपाधियाँतीन अथवा चार वर्ष की हो सकती हैं। समयावधि के अनुसार ये सर्टिफिकेट, डिप्लोमा या उपाधिहो सकती हैं : रोजगारपरक एवं उद्यमी क्षेत्रों सहित किसी विशिष्ट अनुशासन या क्षेत्र में एक वर्ष के अध्ययन के बाद स्नातक प्रमाणपत्र; दो वर्ष के बाद स्नातक डिप्लोमा या तीन वर्ष का पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर स्नातक की उपाधि। हालाँकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति चार वर्षीय बहुअनुशासनिक स्नातक कार्यक्रम (FYUP) को प्राथमिकता देती है जिससे चयनित मेजर और माइनर विषयों के अध्ययन के साथ-साथ विद्यार्थियों को एक व्यापक और अंतरअनुशासनिक शिक्षा प्रदान की जा सके। चार वर्षीय बहुअनुशासनिक स्नातक कार्यक्रम में शोध के साथ स्नातक उपाधि का विकल्प भी रहेगा।

स्नातक कार्यक्रमों के उपर्युक्त पुनर्संयोजन के अनुरूप, उच्च शिक्षा संस्थानों (HEI) को परास्नातक कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने की स्वतंत्रता प्रदान की गयी है। दो वर्षीय इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को यह अवसर प्राप्त होगा कि वे दूसरे वर्ष में शोध केन्द्रित अध्ययन भी कर सकेंगे। चार वर्षीय प्रतिष्ठा स्नातक कार्यक्रम/ चार वर्षीय शोध के साथ प्रतिष्ठा स्नातक कार्यक्रम पूरा करने वाले विद्यार्थियों के लिए एकवर्षीय परास्नातक कार्यक्रम प्रस्तावित है।

टेबल 1 : परास्नातक कार्यक्रम के लिए क्रेडिट अर्हता एवं पात्रता

क्रम सं.	कार्यक्रम का नाम	स्तर	क्रेडिट	क्रेडिट अंक
1.	परास्नातक डिप्लोमा	6	40	240
2.	चार वर्षीय स्नातक के बाद एक वर्ष का परास्नातक	6.5	40	260
3.	तीन वर्षीय स्नातक के बाद दो वर्ष का परास्नातक	6.5	40+40	260
4.	चार वर्षीय स्नातक के बाद 2 वर्ष का परास्नातक	7	40+40	280

परास्नातक कार्यक्रम के लिए ढांचागत मॉडल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के अनुरूप निर्मित इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत परास्नातक के तीन मॉडल होंगे- मॉडल 1. दो वर्षीय परास्नातक पाठ्यक्रम (शोध), मॉडल-2. दो वर्षीय परास्नातक पाठ्यक्रम (कोर्स वर्क तथा शोध) एवं मॉडल-3. दो वर्षीय परास्नातक पाठ्यक्रम (कोर्स वर्क- केवल विषय विशेष का अध्ययन)। परास्नातक पाठ्यक्रम के विभिन्न मॉडलों में पाठ्यक्रम की रूपरेखा का विवरण इस प्रकार है :

मॉडल-1. इस मॉडल के अंतर्गत परास्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थी,प्रथम एवं द्वितीय सत्र के अध्ययन के पश्चात 40 क्रेडिट प्राप्त कर यदि पाठ्यक्रम को छोड़ देते हैं तो ऐसे छात्रों को परास्नातक में डिप्लोमा की उपाधि दी जाएगी। शेष छात्र तृतीय एवं चतुर्थ सत्रों में कुल 40 क्रेडिट की शोध परियोजना पूर्णकरेंगे। ऐसे छात्रों को शोध सहित परास्नातक की उपाधि प्रदान की जाएगी। ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने चार वर्षीय स्नातक (शोध के साथ)की उपाधि प्राप्त की है, वे परास्नातक के इस मॉडल के अंतर्गत सीधेतृतीयसत्र में प्रवेश ले सकते हैं, बशर्ते वे विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित सभी अर्हताओं को पूर्ण करते हों।

मॉडल-2. इस मॉडल के अंतर्गत परास्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थी,प्रथम एवं द्वितीय सत्र की पढ़ाई के पश्चात 40 क्रेडिट प्राप्त कर यदि पाठ्यक्रम को छोड़ देते हैं तो ऐसे छात्रों को परास्नातक में डिप्लोमा की उपाधि दी जाएगी।
शेष विद्यार्थी,तृतीय सत्र में 20 क्रेडिट का विषय केन्द्रित पत्र पढ़ेंगे एवं चतुर्थ सत्र में 20 क्रेडिट की शोध परियोजना पूर्णकरेंगे। ऐसे छात्रों को परास्नातक की उपाधि (विषय विशेष तथा शोध) प्रदान की जाएगी।ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने चार वर्षीय स्नातक (शोध के साथ) की उपाधि प्राप्त की है, वे परास्नातक के इस मॉडल के अंतर्गत सीधेतृतीयसत्र में प्रवेश ले सकते हैं, बशर्ते वे विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित सभी अर्हताओं को पूर्ण करते हों।

मॉडल-3.इस मॉडल के अंतर्गत परास्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थी,प्रथम एवं द्वितीय सत्र की पढ़ाई के पश्चात 40 क्रेडिट प्राप्त कर यदि पाठ्यक्रम को छोड़ देते हैं तो ऐसे छात्रों को परास्नातक में डिप्लोमा की उपाधि दी जाएगी। शेष विद्यार्थी,तृतीय तथा चतुर्थ सत्र के अंतर्गत कुल 80 क्रेडिट का पाठ्यक्रम पढ़ेंगे। ऐसे विद्यार्थीचार सत्र की पढ़ाई के पश्चात हिंदी विषय में परास्नातक की उपाधि प्राप्त करेंगे।ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने चार वर्षीय स्नातक (विषय विशेष) की उपाधि प्राप्त की है, वे परास्नातक के इस मॉडल के अंतर्गत सीधेतृतीयसत्र में प्रवेश ले सकते हैं, बशर्ते वे विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित सभी अर्हताओं को पूर्ण करते हों।

विवरण :

तीनवर्षीय स्नातक कार्यक्रम पूर्ण करने के उपरांत द्विवर्षीय परास्नातक कार्यक्रम के लिए विद्यार्थियों के पास निम्नलिखित विकल्प होंगे - 1. प्रथम औरद्वितीय सत्र में विषय अध्ययन तथा तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में केवल शोध परियोजना, 2. प्रथम, द्वितीय एवंतृतीय सत्रमें मूल विषय अध्ययन सहित चतुर्थ सत्र में शोध परियोजना, 3. प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में केवल मूल विषय अध्ययन।

इसी तरह, चारवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम पूर्ण कर परास्नातक के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के पास निम्नलिखित विकल्प होंगे- 1. शोध परियोजना, 2. मूल विषय अध्ययन के साथ शोध परियोजना,3. मूल विषय अध्ययन।

टेबल 2 : परास्नातक कार्यक्रम हेतु पाठ्यक्रम एवं क्रेडिट ढांचा

<table>
<tr><th rowspan="2" colspan="2">पाठ्यक्रम –विवरण</th><th colspan="4">हिंदी में द्विवर्षीय परास्नातक कार्यक्रम
न्यूनतम क्रेडिट</th></tr>
<tr><th>पाठ्य स्तर</th><th>पाठ्यक्रम</th><th>शोध प्रबंध / शोध परियोजना/ पेटेंट</th><th>कुल क्रेडिट</th></tr>
<tr><td rowspan="2" colspan="2">द्विवर्षीय परास्नातक/परास्नातक डिप्लोमा (लेवेल 6.0) का प्रथम वर्ष (प्रथम एवं द्वितीय सत्र)</td><td>400</td><td>20</td><td rowspan="2">-</td><td rowspan="2">40</td></tr>
<tr><td>400</td><td>20</td></tr>
<tr><td colspan="6">यदि कोई विद्यार्थी प्रथम वर्ष (प्रथम एवं द्वितीय सत्र) के पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् कार्यक्रम को छोड़ना चाहे तो उन्हें परास्नातक डिप्लोमा की उपाधि दी जाएगी।</td></tr>
<tr><td rowspan="3">द्विवर्षीय परास्नातक का दूसरा वर्ष (तृतीय एवं चतुर्थ सत्र)</td><td>केवल शोध (मॉडल 1)</td><td>500</td><td>-</td><td>40</td><td>40</td></tr>
<tr><td>विषय विशेष के साथ शोध (मॉडल 2)</td><td>500</td><td>20</td><td>20</td><td>40</td></tr>
<tr><td>केवल विषय अध्ययन (मॉडल 3)</td><td>500</td><td>20</td><td>20</td><td>40</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम स्तर

- 400-499 : स्नातक स्तर के चौथे वर्ष अथवा परास्नातक के प्रथम वर्ष के सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक पाठ्यक्रमों में व्याख्यान के साथ उन्नत एवं संवर्धित पाठ्यक्रम, आनुभविक ज्ञान, संगोष्ठी आधारित पाठ्यक्रम, अवधि पत्र, शोध प्रविधि, उन्नत प्रयोगशाला/सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण, शोध परियोजना,हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण, इंटर्नशिप/अप्रेंटशिप परियोजना आदि शामिल होगी।
- 500-599 : चारवर्षीय स्नातक की उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों को परास्नातक स्तर पर अपने मूल विषय के मेजर या विशेषज्ञता प्राप्त क्षेत्र में अध्ययन अथवा अनुसन्धान के लिए अवसर प्रदान किया जाएगा।

1.5 अकादमिक सुगमता

- अकादमिक सुगमताराष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की एक बड़ी विशेषता है। हिंदी में परास्नातक करने का लाभ यह है कि यह विद्यार्थियों को बहुत विकल्प प्रदान करता है, जैसे- ऑनलाइन कार्यक्रमों में प्रवेश लेना, एक साथ दो स्नातकोत्तर कार्यक्रमों का अध्ययन करना, कार्य अनुभव कोक्रेडिट रूप में शामिल करना आदि। इसके अतिरिक्त यह महत्वपूर्ण बात है कि विद्यार्थी अपनी वर्तमान जिम्मेदारियों के साथ-साथ पूर्ण रूप से ऑनलाइन स्नातकोत्तर कार्यक्रमों का अध्ययन कर सकते हैं। इसके द्वारा अपना काम करते हुए स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करना आसान और सुगम हो जाता है।
- विद्यार्थीएक साथ दो शैक्षणिक कार्यक्रमों का अध्ययन कर सकते हैं, जैसे- 1) भौतिक मोड में दो पूर्णकालिक शैक्षणिक कार्यक्रम, बशर्ते कि दोनों कार्यक्रमों कीकक्षाओंका समय एक साथ न हो। 2) एक विद्यार्थीएक साथ दो शैक्षणिक कार्यक्रम, एक पूर्णकालिक - भौतिक माध्यम में और दूसरा मुक्त और दूरस्थ अध्ययन (ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग - ODL)/ ऑनलाइन में या एक साथ दो मुक्त और दूरस्थ अध्ययन (ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग -ODL) पाठ्यक्रम/ ऑनलाइन कार्यक्रमों का अध्ययन कर सकता है। मुक्त और दूरस्थ अध्ययन (ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग -ODL)/ ऑनलाइन माध्यम के तहत डिग्री या डिप्लोमा कार्यक्रम केवल ऐसे उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा दिये जाएंगे जिन्हें ऐसे कार्यक्रम चलाने के लिए यूजीसी/ सांविधिक परिषद / भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।
- विषय विशेष में प्रासंगिक कार्य अनुभव का क्रेडिटीकरण (स्वीकार करना) शिक्षा को अधिक समग्र बनाने की एक और पहल है। UGC-NCrF किसी व्यक्ति द्वारा किसी विशेष शैक्षिक कार्यक्रम को करने के उपरांत, उसके अनुभव के तहत प्राप्त क्रेडिट को स्वीकृति प्रदान करता है । यदि कोई शिक्षार्थीरोजगार के माध्यम से प्रासंगिक क्षेत्र में अनुभव प्राप्त कर चुकाहै तथाविषय विशेष में परास्नातक के अध्ययन में उसका क्रेडिटीकरण चाहता हैतो मूल्यांकन के बाद कार्य अनुभव को क्रेडिट किया जा सकता है। तदनुसार, उस अवधि को राजीव गांधी विश्वविद्यालय द्वारा समायोजित भी किया जा सकता है। इस प्रक्रिया के तहत प्रदान किया जाने वाला अधिकतम वेटेज दो (2) है यानी एक विद्यार्थी/ प्रशिक्षित व्यक्ति अधिकतम आधार योग्यता / कौशल के लिए अर्जित क्रेडिट के बराबर क्रेडिट अर्जित कर सकता है, बशर्ते उसके पास एक निश्चित संख्या से अधिक वर्षों का कार्य अनुभव हो। हालाँकि, अर्जित क्रेडिट का प्रतिदानराष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCrF) में दिए गए मूल्यांकन बैंड (वर्ग) के सिद्धांत पर आधारित होगा।
- विभिन्न पार्श्व प्रवेश (Lateral Entry) विकल्पों के साथ क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर गतिशीलता (Horizontal and Vertical Mobility) को सक्षम करने वाले कई स्तरों पर उच्च शिक्षा में प्रवेश या प्रवेश के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) केदिशानिर्देशों के अनुसार क्रेडिट पॉइंट्स का उपयोग किया जा सकता है।
- प्रासंगिक अनुभव और व्यावसायिक स्तरों सहित प्रासंगिक अनुभवात्मक शिक्षा के आधार पर शिक्षार्थी द्वारा अर्जित क्रेडिट की गणना करने का सिद्धांत और उद्योग (इंडस्ट्री) में शिक्षार्थी/छात्र द्वारा प्राप्त प्रवीणता स्तर (शैक्षणिक ग्रेड/कौशल-आधारित कार्यक्रम के पूरा होने के बाद) नीचे दी गई तालिका 1.5.1 में दिया गया है।

1.5.1प्रासंगिक अनुभव/ प्रवीणता के लिए क्रेडिट कार्यभार

अनुभव एवं प्रवीणता स्तर	प्रासंगिक अनुभवात्मक शिक्षा का विवरण जिसमें अर्जित प्रासंगिक अनुभव और व्यावसायिक स्तर तथा प्रवीणता स्तर प्राप्त करना शामिल है	वेटेज/गुणन कारक	अनुभव के वर्षों की संख्या (केवल सांकेतिक)
प्रशिक्षित/ योग्यता प्राप्त	कोई व्यक्ति जिसने पाठ्यक्रम/शिक्षा/प्रशिक्षण पूरा कर लिया हो और उसे किसी विशेष कार्य या गतिविधि के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान सिखाया गया हो।	1	1 वर्ष से कम या बराबर
प्रवीण	प्रवीण का अर्थ होगा किसी विशेष पेशे, कौशल या ज्ञान में उन्नति का स्तर होना।	1.33	1वर्ष से अधिक या 4 वर्ष से कम
विशेषज्ञ	विशेषज्ञ का अर्थ है व्यापार या पेशे में उच्च स्तर का ज्ञान और अनुभव होना।	1.67	4 वर्ष से अधिक या 7 वर्ष से कम
निपुण	निपुण वह व्यक्ति होता है जिसके पास किसी विषय/ कार्यक्षेत्र। का असाधारण कौशल या ज्ञान होता है।	2	7 वर्ष से अधिक

1.6 मूल्यांकन प्रक्रिया

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में योगात्मक मूल्यांकन के बजाय रचनात्मक और सतत मूल्यांकन पर जोर दिया गया है। इसलिए, मूल्यांकन की योजना में इन दो प्रकार के मूल्यांकन के घटक होंगे। पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चातविद्यार्थीद्वारा प्राप्त किए जाने वाले अधिगम के परिणामों के साथ मूल्यांकन का सहसंबंध होना चाहिए। इसलिए, मूल्यांकन की पद्धति और प्रणाली को अधिगम की उपलब्धियों(Learning Outcomes) द्वारा निर्देशित होना चाहिए।

1.6.1 पाठ्यक्रम मूल्यांकन/आकलन

हिंदी में स्नातकोत्तर कार्यक्रम में प्रत्येक पाठ्यक्रमकेमूल्यांकन/आकलन के लिए अंक वितरण के रूप में मूल्यांकन प्रणाली को क्रेडिट प्रणाली में दर्शाया गया है।

1.7 लेटर ग्रेड और ग्रेड पॉइंट

सेमेस्टर ग्रेड पॉइंट औसत (SGPA) की गणना किसी दिए गए सत्र में छात्र के प्रदर्शन के आधार पर प्राप्त ग्रेड से की जाती है। SGPA वर्तमान अवधि के ग्रेड पर आधारित है, जबकि संचयी ग्रेड पॉइंट औसत(CGPA) अध्ययन के कार्यक्रम में शामिल होने के बाद लिए गए सभी पाठ्यक्रमों के कुल ग्रेड पर आधारित है। उच्च शिक्षा संस्थान छात्रों के लाभ के लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम में प्राप्त अंकों और सभी सत्रों में प्राप्त अंकों के आधार पर अंकों का भारित औसत (weighted average) भी बता सकते हैं।

Letter Grade	Grade Point
O (Outstanding)	10
A+ (Excellent)	9
A (Very Good)	8
B+ (Good)	7
B (Above Average)	6
C (Average)	5
P (Pass)	4
F (Fail)	0
Ab (Absent)	0

1.7.1 SGPA और CGPA की गणना

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सेमेस्टर ग्रेड प्वाइंट औसत (SGPA) और संचयी ग्रेड प्वाइंट औसत (CGPA) की गणना के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया की सिफारिश करता है:

i. **SGPA-** किसीविद्यार्थी द्वारा लिए गए सभी पाठ्यक्रमों में प्राप्त ग्रेडपॉइंट के साथ क्रेडिट की संख्याके गुणनफलों के योग को उस विद्यार्थी द्वारा पूरे किये गए सभी पाठ्यक्रमों की कुल क्रेडिट संख्या से भाग देकर**SGPA** प्राप्त होगा। जैसे -

$$SGPA(Si)=\sum (CixGi)/\sum Ci$$

-यहाँCi, कोर्स के क्रेडिट की संख्या है और Gi, कोर्स में छात्र द्वारा प्राप्त ग्रेड पॉइंट है।

SGPA की गणना का उदाहरण इस प्रकार है:

सत्र	पाठ्यक्रम	क्रेडिट	लैटर ग्रेड	ग्रेडपॉइंट	(क्रेडिटx ग्रेड)
1					
1	पाठ्यक्रम 1				
1	पाठ्यक्रम 1				
1	पाठ्यक्रम 1				
1	पाठ्यक्रम 1				
1	पाठ्यक्रम 1				
		20			139
SGPA					139/20=6.95

ii संचयी ग्रेड प्वाइंट औसत (CGPA) की गणना भी उसी तरीके से की जाती है। इसमेंविद्यार्थी द्वारा कार्यक्रम के सभी सत्रोंमें प्राप्त किए गए सभी पाठ्यक्रमों के क्रेडिटको ध्यान में रखा जाता है, जैसे

CGPA=∑ (CixSi)/ ∑Ci

यहाँSi उस सत्र का SGPA है तथा Ci उस सत्र में कुल क्रेडिटों की संख्या है।

SGPA की गणना के लिए उदाहरण इस प्रकार है :

Semester1	Semester2	Semester3	Semester4

SGPA औरCGPA को 2 दशमलव अंकों तक पूर्णांकित किया जाएगा और प्रतिलेख में दर्ज किया जायेगा।

पाठ्यक्रम का शैक्षिक उद्देश्य [Programme Educational Objective (PEO)]

1. विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास और परम्परा से परिचित कराना।
2. विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के उद्भव और विकास सेअवगत कराना।
3. विद्यार्थियों को साहित्य सिद्धांत और साहित्य समालोचना से परिचित कराना।
4. विद्यार्थियों को विभिन्न कालखंडों की हिंदी कविता और उनके रचनाकारों के बारे में जानकारी देना।
5. विद्यार्थियों को विभिन्न कालखंडों के हिंदी गद्यतथा उनके रचनाकारों से अवगत कराना।
6. राष्ट्रीय चेतना की कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति चेतना जागृत करना।
7. विद्यार्थियोंमेंप्रयोजनमूलक हिंदी के अध्ययन द्वारा हिंदी शिक्षण और लेखन कौशल को प्रोत्साहित करना।
8. भारतीय साहित्य के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में बहुभाषिकता एवं बहु सांस्कृतिकता की भावना का विकास करना।
9. लोक साहित्य के अध्ययन के माध्यम से लोक साहित्य के संग्रहण और विश्लेषण को बढ़ावा देना साथ ही अरुणाचल प्रदेश के लोक साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
10. पटकथा लेखन, समाचार लेखन, दृश्य-श्रव्य माध्यम लेखन एवंविज्ञापन लेखन के माध्यम से विद्यार्थियों में रोजगारपरकता को बढ़ावा मिलेगा।
11. प्रवृत्ति केन्द्रित एवं साहित्यकार केन्द्रित पत्रों के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति गहरी अभिरुचि पैदा करना।
12. विद्यार्थियोंकोविभिन्न शोध प्रविधियों से अवगत कराना।
13. शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के अध्ययन से विद्यार्थियों को शोध के दार्शनिक और नैतिक पक्ष से अवगत कराना।
14. भाषा और साहित्य में मात्रात्मक और गुणात्मक अनुसंधान के बारे में विद्यार्थियोंको परिचित कराना।
15. विद्यार्थियों को पत्रकारिता और मीडिया के क्षेत्र में विद्यमान रोज़गार की संभावनाओं से परिचित कराना।
16. साहित्य में चल रहे विमर्शों के माध्यम से नवीन विमर्शों के महत्त्व के प्रति छात्रों में जागरूकता का प्रसार।
17. साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन तथा प्रवासी साहित्य अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
18. विद्यार्थियोंको अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों का विश्लेषण करने और एक अनुसंधान परियोजना लिखने में सक्षम बनाना।
19. साहित्य अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता को संवर्धित करना।
20. साहित्य के महत्व और उसकी सार्थकता को स्पष्ट करना।
21. उच्च शिक्षा में शोध की महत्ता और शोध के क्षेत्र में अवदान के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा शोध के प्रति आकर्षण पैदा करना।
22. साहित्य के आस्वादन और मूल्यांकन से सम्बंधित विवेक को जागृत करना।
23. इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न व्यावसायिक कौशल में प्रशिक्षित करना।

पाठ्यक्रम की उपलब्धियाँ [Programme Outcomes (POs)]

1. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के अध्ययन के माध्यम से उसके इतिहास, साहित्यिक रूपों, विविध विधाओं तथा भाषा का ज्ञान अर्जित कर सकेंगे। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से वे आदिकालीन, मध्यकालीन और आधुनिककालीन कवियों एवं रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन-विश्लेषण तथा इनसे सम्बंधित शोध कार्य की तैयारी कर सकेंगे। इसके साथ ही विद्यार्थी राष्ट्रीय चेतना तथा देशप्रेम के विविध आयामों से सम्बंधित साहित्य से परिचित हो सकेंगे।इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में समावेशी और समता की भावना का विकास होगा तथा भारतीय साहित्य के समग्र अध्ययन से उनमें बहुसांस्कृतिकता और बहुभाषिकता के प्रति सम्मान विकसित होगा।इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से वे एक आदर्श नागरिक के रूप में विकसित होंगे तथा एक बेहतर समाज बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे और इस प्रकार देश के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दे सकेंगे। कंप्यूटर ज्ञान तथा वेब ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान के अन्यान्य स्रोतों से जुड़ सकेंगे तथा उनका लाभ उठा सकेंगे।

2. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों में सृजनात्मककल्पनाशीलतातथा नवीन विचारों की उद्भावना होगी जिसके माध्यम से वे साहित्य और समाज के मूल्यों को समझने में समर्थ होंगे। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी रचनात्मक लेखन के आवश्यक गुणों का अध्ययन करते हुए साहित्य की विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं के व्यावहारिक पक्ष को समझने में पारंगत हो सकेंगे, इसी के साथ शोध कार्य में प्रकाशन नैतिकता, उसके महत्व तथा शोध सम्बंधित प्रायोगिक कार्य भी कर सकेंगे।

3. इस पाठ्यक्रम के अध्ययनोपरांत विद्यार्थी साहित्यशास्त्रीयकला-विधान तथा साहित्य कीविभिन्न विधाओं केरचनात्मक सौंदर्य को आत्मसात कर सकेंगे। समय-समय पर उद्भावित साहित्यशास्त्रीय आलोक में काव्य-सौंदर्यके विभिन्न तत्वों सेपरिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य के विभिन्न साहित्यशास्त्रीय सिद्धांतों और विचारधाराओं को समझने में सक्षम हो सकेंगे। इस प्रक्रिया में कंप्यूटर तथा वेब स्रोतों से प्राप्त सामग्री उनके ज्ञान में वृद्धि करेगी।

4. विद्यार्थीहिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के विभिन्नकाव्यान्दोलनों, विमर्शों, आलोचना की परंपरा और दृष्टियाँ, लोक-साहित्य एवं प्रवासी साहित्य की अवधारणा, भारतीय साहित्य की अवधारणा और उसके स्वरूप से अवगत हो सकेंगे। इसी के साथ विद्यार्थी लेखन कौशल के विविध रूपों, भाषागत रचनात्मक सन्दर्भों, व्याकरणिक विधानों, अनुवाद, भाषिक एवं तकनीकी रूपान्तरणों तथा शोध की प्रविधियों एवं उपकरणों इत्यादि से परिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी पारम्परिक एवं आधुनिक संचारमाध्यमों के लेखन व संपादन विधि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा राजभाषा हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों, प्रयोजनमूलक पक्षों और मीडिया आयामों को समझने में समर्थ हो सकेंगे।

पाठ्यक्रम की विशिष्टउपलब्धियाँ Programme Specific Outcomes (PSOs)

PSO1. विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास, रचनाकारों, रचनाओं के मूल तत्त्वों एवं विचार-सरणियों का कालानुक्रम के अनुसार अध्ययन तथा भारतीय साहित्य का भी अध्ययन कर सकेंगे। वेअवधारणात्मक सिद्धांतों, विधागत सन्दर्भों, क्षेत्रीय-राष्ट्रीय चेतनागत विमर्शों तथा वैचारिकी आदि का अध्ययन कर सकेंगे तथा शोध कार्य के माध्यम से अपना बहुआयामी विकास एवं बौद्धिक मूल्य संवर्द्धन करने में सक्षम हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के विभिन्न प्रावधानों तथा हिंदी पोर्टलों पर उपलब्ध ज्ञान से भी अवगत हो सकेंगे।

PSO2. हिंदी साहित्य के विभिन्न पाठों, विधाओं और मौलिक कृतियों के सृजनात्मक, संज्ञानात्मक तथा आलोचनात्मक पक्षों से अवगत होते हुए विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में मानवीय एवं लोकतान्त्रिक मूल्योंकी स्थापना एवं प्रतिष्ठा कर पाने में समर्थ हो सकेंगे।

PSO3. विद्यार्थी भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य-शास्त्र के सिद्धांतों और विचारों का अध्ययन कर सकेंगे।हिंदी साहित्य की रचनाधर्मिता और जनपक्षधरता को सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के आलोक में जान सकेंगे तथा इतिहास एवं लोक-परम्परा में अनुस्यूत वृत्तांतों, दृष्टान्तों और मिथकीय चेतनागत वैशिष्ट्यको समझ सकेंगे। शोध की प्रक्रिया में वे शोध नैतिकता जैसे महत्वपूर्ण विषय का भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। विद्यार्थी इन्हीं गुण-धर्मों के साथ शोध आलेख लेखन का कार्य कर सकेंगे।

PSO4. विद्यार्थी लेखन कौशल के विविध रूपों, रचनात्मक सन्दर्भों, व्याकरणिक विधानों, अनुवाद, भाषिक एवं तकनीकी रूपान्तरणों तथा कंप्यूटर ज्ञान इत्यादि का रोजगारपरक दृष्टिकोण से अंतरानुशासनिक तथा नवाचारी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। शोध उपकरणों के बारे में भी विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे।

PSO5.विद्यार्थियों में मानवीय गुणों का विकास होगा तथा वेहिंदी साहित्य के मूल्य-बोध कोआत्मसातकरेंगे।वे सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन में भूमिका-निर्वाह की दृष्टि से सार्वजनीन एवं उदात्त गुणधर्म सीख एवं जान सकेंगे।

संपर्क एवं परामर्श योजना

क्रेडिट 1 के लिए : **व्याख्यान अवधि : 10 घंटे** **स्वाध्याय अवधि : 20 घंटे** **अधिगम अवधि : 30 घंटे**	**क्रेडिट 4 के लिए :** **व्याख्यान अवधि : 40 घंटे** **स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे** **अधिगम अवधि : 120 घंटे**

मॉडल -3

दो वर्षीय परास्नातक (विषय विशेष) के लिए पाठ्यक्रम संरचना

NCrF क्रेडिट स्तर	सत्र	पाठ्यक्रम का शीर्षक	पाठ्यक्रम का स्तर	क्रेडिट	कुल क्रेडिट	अधिकतम अंक			क्रेडिट वितरण	संवाद-अवधि
						आतंरिक	सत्रांत परीक्षा	कुल	L: T: P	
6	प्रथम	CDOE-HIN-101-CC-5110 हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)	400	4	20	20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CC-5120 आदिकालीन साहित्य एवं निर्गुण भक्ति काव्य	400	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CC-5130 भारतीय काव्य शास्त्र	400	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CC-5140 कहानी एवं अन्य गद्य विधाएँ	400	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-RC-5110 शोध प्रविधि/ समकक्ष MOOC's पाठ्यक्रम	500	4		20	80	100	3:1:0	120
	द्वितीय	CDOE-HIN-101-CC-5210 हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिक काल	400	4	20	20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-DE-52010 सगुण भक्ति काव्य एवं रीति काव्य	500	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-DE-52020	500	4		20	80	100	3:1:0	120

		आधुनिक काव्य							
		CDOE-HIN-101-DE-52030 हिन्दी नाटक एवं निबंध	500	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-RC-5210 शोध एवं प्रकाशन नैतिकता/ समकक्ष MOOC's पाठ्यक्रम	400	4		20	80	100	1:1:2	120
		कुल क्रेडिट (प्रथम वर्ष)			**40**					

इस मॉडल के अंतर्गत परास्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त करने वाले विद्यार्थी प्रथम एवं द्वितीय सत्र की पढ़ाई के पश्चात 40 क्रेडिट प्राप्त कर यदि पाठ्यक्रम को छोड़ देते हैं तो ऐसे विद्यार्थियों को परास्नातक में डिप्लोमा की उपाधि दी जाएगी। शेष छात्र तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में 20-20क्रेडिट केविषय केन्द्रित पाठ्यक्रम का अध्ययन करेंगे। ऐसे छात्र जो कुल 80 क्रेडिट अर्जित करेंगे, उन्हें परास्नातक की उपाधि (विषयविशेष में) प्रदान की जाएगी।

6.5	**तृतीय**	CDOE-HIN-101-CW-61010 हिन्दी साहित्य का इतिहास – 3 (गद्य साहित्य एवं पत्रकारिता)	500	4	**20**	20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CW-61020 हिन्दी आलोचना एवं आलोचक	500	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CW -61030 भारतीय साहित्य	500	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CW-61040 निर्गुण भक्ति-काव्य	500	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CW-61050 प्रयोजनमूलक हिन्दी	500	4		20	80	100	3:1:0	120
चतुर्थ सत्र										
		CDOE-HIN-101-CW-	500	4		20	80	100	3:1:0	120

		62010 समकालीन हिन्दी काव्य								
		CDOE-HIN-101-CW-62020 हिन्दी उपन्यास एवं आत्मकथा	500	4	**20**	20	80	100	3:1:0	120
	चतुर्थ	CDOE-HIN-101-CW-63030 अरुणाचली लोक साहित्य	500	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CW-62040 तुलनात्मक भारतीय साहित्य	500	4		20	80	100	3:1:0	120
		CDOE-HIN-101-CW-62050 हिन्दी सिनेमा औरसाहित्य	500	4		20	80	100	3:1:0	120
	कुल क्रेडिट				**80**					

प्रथम सत्र

प्रथम सत्र

CDOE-HIN-101-CC-5110

हिन्दी साहित्य का इतिहा

(आदिकाल से रीतिकाल तक)

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट: 4

व्याख्यान अवधि : 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100

अभ्यन्तर : 20

सत्रांत परीक्षा : 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1.इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को साहित्य के इतिहास दर्शन, इतिहास लेखन की पद्धतियाँ, समस्याएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण की जानकारी प्राप्त होगी।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं विभिन्न धाराओं तथा आदिकालीन साहित्य की भाषा से अवगत हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी भक्ति-आन्दोलन के उद्भव और विकास, पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, भक्ति के अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्त: प्रादेशिक वैशिष्ट्य, भक्ति साहित्य की विभिन्न धाराओं तथा भाषा दृष्टि एवं काव्य भाषा काज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, रीति की अवधारणा तथा रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं से अवगत हो सकेंगे तथा रीतिकालीन साहित्य की काव्य भाषा तथा अभिव्यंजना शिल्प को जान सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को साहित्य के इतिहास दर्शन, इतिहास लेखन की पद्धतियाँ, समस्याएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण की जानकारी हुई।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों एवं विभिन्न धाराओं तथा आदिकालीन साहित्य की भाषा से अवगत हुए।

CO3. विद्यार्थी भक्ति-आन्दोलन के उद्भव और विकास, पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, भक्ति के अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्त:प्रादेशिक वैशिष्ट्य, भक्ति साहित्य की विभिन्न धाराओं तथा भाषा दृष्टि एवं काव्य भाषा काज्ञान प्राप्त किया।

CO4. विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, रीति की अवधारणा तथा रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराओं से अवगत हुए तथा रीतिकालीन साहित्य की काव्य भाषा तथा अभिव्यंजना शिल्प को भी जान सके।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	साहित्य का इतिहास दर्शन और इतिहास लेखन की पद्धतियां; साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ; हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, हिन्दी साहित्य का इतिहास: काल विभाजन, सीमा-निर्धारण और नामकरण।	30	C1

2	आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; रासो साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, बौद्ध-सिद्ध साहित्य; अमीर खुसरो की हिन्दी कविता एवं लोक काव्य; आदिकालीन साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियां; आदिकालीन साहित्य की भाषा।	30	C2
3	भक्ति-आन्दोलन : उद्भव और विकास; भक्तिकाल की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; भक्ति का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्त:प्रादेशिक वैशिष्ट्य; भक्ति साहित्य की विभिन्न धाराएं- संत काव्य, सूफी काव्य, कृष्ण काव्य; राम काव्य; परिचय, प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाएं और रचनाकार, भक्तिकालीन साहित्य और लोकजागरण, भक्तिकालीन कवियों की भाषा दृष्टि एवं काव्य भाषा।	30	C3
4	ीन साहित्य की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियां; रीति की अवधारणा और रीति ातिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं : सामान्य परिचय, रचनाएं, रचनाकार एवं ृत्तियां; रीतिकालीन काव्य भाषा एवं अभिव्यंजना शिल्प।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	3	1	3	2	2	1	2
CO2	3	3	3	1	3	2	2	1	2
CO3	3	3	2	1	3	2	2	1	3
CO4	3	3	3	1	3	2	2	1	2
Average	3	3	2.75	1	3	2	2	1	2.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश :

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4=60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसकेविकल्पभी होंगे। 5x4=20

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य की भूमिका - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

4. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली
6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2 - विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास - सं. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
8. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद
9. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी - आ. नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती, इलाहाबाद
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (प्रथम एवं द्वितीय खण्ड) - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती
13. साहित्य और इतिहास दर्शन - डॉ. मैनेजर पाण्डेय
14. साहित्य की समाजशास्त्रीय भूमिका - डॉ. मैनेजर पाण्डेय
15. आलम (हिंदी कवि) - भवदेव पाण्डेय , साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
16. कबीर - प्रभाकर माचवे, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
17. केशवदास - जगदीश गुप्त, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. चंडीदास - सुकुमार सेन, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
19. गोस्वामी तुलसीदास - रामजी तिवारी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. गोरखनाथ - नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. घनानन्द - लल्लन राय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

प्रथम सत्र

CDOE-HIN-101-CC-5120

आदिकालीन साहित्य एवं निर्गुण भक्ति काव्य

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत परीक्षा : 80

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि : 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सरहपा और चंदबरदाई की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन कर सकेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्यतथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से भी अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी विद्यापति और जायसी की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी कबीर और शंकरदेव की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी रैदास और दादू की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन करेंगे, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने सरहपा और चंदबरदाई की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने विद्यापति और जायसी की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने कबीर और शंकरदेव की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने रैदास और दादू की चयनित कविताओं की व्याख्या और समीक्षा का अध्ययन किया, साथ ही उनके काव्यगत वैशिष्ट्य तथा अन्य आलोचनात्मक पक्षों से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	**सरहपा** सिद्ध साहित्य का अन्त:प्रादेशिक प्रभाव, सिद्ध साहित्य और सरहपा, सरहपाका	30	C1

	काव्यगत वैशिष्ट्य। पाठ्य पुस्तक आदिकालीन काव्य, सं.- वासुदेव सिंह; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। पाठांश- दोहा कोश से दोहा संख्या – 1,2,5,6,7,9,11,12,13 तथा 14 **चंदबरदाई** पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता; शशिव्रता विवाह प्रस्ताव का प्रतिपाद्य; शशिव्रता विवाह प्रस्ताव का काव्यगत वैशिष्ट्य; रासो की काव्य-भाषा। पाठ्य पुस्तक - पृथ्वीराज रासो, सं.- हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह पाठांश: छंद सं. 1 से 18 तक		
2	**विद्यापति** गीतिकाव्य परम्परा और विद्यापति पदावली; पदावली में भक्ति और शृंगार; विद्यापति की सौन्दर्य दृष्टि तथा विद्यापति का काव्यगत वैशिष्ट्य। पाठ्यपुस्तक- विद्यापति पदावली; सं.- डॉ. शिव प्रसाद सिंह पाठांश–पद संख्या-1 से 8,10,16,18,26,51,53,54,56,57, 58 तथा 60 **जायसी** सूफी काव्य परम्परा और जायसी; नागमती वियोग वर्णन; पद्मावत का प्रेम-वर्णन; जायसी का काव्यगत वैशिष्ट्य। पाठ्य पुस्तक – जायसी ग्रन्थावली; सं.- रामचन्द्र शुक्ल पाठांश: नागमती वियोग खण्ड, पाठांश पद सं.- 4 से 15 तक	30	C2
3	**कबीर** सन्त-काव्य और कबीर; कबीर की भक्ति-भावना; कबीर-काव्य का सामाजिक पक्ष, कबीर की दार्शनिक-चेतना। पाठ्य पुस्तक – कबीर: हजारीप्रसाद द्विवेदी, पाठांश-पद: 1,2,33,41,123,130,134,160,163,168,191,199,224,247,256 **शंकरदेव** शंकरदेव: व्यक्तित्व और कृतित्व; भक्ति का अखिल भारतीय स्वरूप और शंकरदेव; शंकरदेव की भक्ति; शंकरदेव की काव्य–भाषा और ब्रजावली। पाठ्य पुस्तक : शंकरदेव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व-भूपेन्द्रराय चौधरी पाठांश-पद सं. : पुस्तक में संकलित पाँचों बरगीत	30	C3
4	**रैदास** रैदास की भक्ति-भावना; रैदास की सामाजिक चेतना, रैदास का दर्शन, रैदास की काव्यगत विशेषताएँ। पाठ्य पुस्तक – रैदास बानी ; सं. शुकदेव सिंह ; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। पाठांश-पद सं.: 41, 42, 46, 58, 62, 66, 71, 72, 75, 82 **दादू दयाल** सन्त काव्य और दादू की रचनाएँ; दादू की शिष्य परम्परा; दादू का दार्शनिक वैशिष्ट्य; दादू-काव्य का भाषिक वैशिष्ट्य। पुस्तक – संत-काव्य; सं.- परशुराम चतुर्वेदी; किताब महल, इलाहाबाद। द सं. : प्रारम्भ से पाँच पद।	30	C4

कुल संवाद-अवधि	120

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO2	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO3	3	3	3	2	3	3	3	1	3
CO4	3	3	3	2	3	3	3	1	3
Average	3	3	3	2	3	3	3	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश :

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4= 48

सहायक ग्रंथ:

1. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. पृथ्वीराज रासो: भाषा और साहित्य - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. कबीर बीजक की भाषा - डॉ. शुकदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. जायसी - विजयदेव नारायण साही, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
6. सूफीमत: साधना और साहित्य - डॉ. रामपूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, काशी।
7. मध्यकालीन धर्म साधना - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. नाथ पंथ और संत साहित्य - डॉ. नगेन्द्रनाथ उपाध्याय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. संत साहित्य की समझ - डॉ. नन्द किशोर पाण्डेय, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
10. मध्यकालीन काव्य आन्दोलन - डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र
11. साहित्य विमर्श का विवेक - डॉ. सुशील कुमार शर्मा, मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली।
12. मधुमालती में प्रेम-व्यंजना - डॉ. सुशील कुमार शर्मा, उपहार प्रकाशन, दिल्ली।
13. शंकरदेव: साहित्यकार और विचारक - प्रो. कृष्णनारायण प्रसाद मागध।
14. दादूपन्थ: साहित्य और समाज दर्शन -डॉ. ओकेन लेगो; यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
15. विद्यापति: अनुशीलन और मूल्यांकन - डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्त्व, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना।
16. सामाजिक समरसता में मुसलमान हिन्दी कवियों का योगदान - डॉ. लखनलाल खरे, रजनी प्रकाशन, दिल्ली।
17. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
18. लोहित के मानसपुत्र : शंकरदेव - सांवरमल सांगानेरिया; हेरिटेज फाउंडेशन
19. जगनिक - अयोध्या प्रसाद कुमुद, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. दाददयाल - रामबक्ष, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. पुष्पदंत - योगेन्द्र नाथ शर्मा'अरुण', साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
22. रहीम - विजयेन्द्र स्नातक, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
23. रैदास - धर्मपाल मैनी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

24. विद्यापति - रमानाथ झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
25. स्वयंभू - सदानन्द शाही, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
26. सरहपा - विश्वम्भर नाथउपाध्याय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
27. संत कवि दादू - बलदेव बंशी
28. विद्यापति - लालसा यादव

प्रथम सत्र

CDOE-HIN-101-CC-5130

भारतीय काव्य शास्त्र

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि : 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत परीक्षा : 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के संक्षिप्त इतिहास, काव्य लक्षण, हेतु, प्रयोजन, प्रकार, गुण-दोष, शब्द शक्तियों और काव्य भेद से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति संबंधी विभिन्न अवधारणाओं तथा साधारणीकरण की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी ध्वनि सिद्धांत, रीति सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत तथा औचित्य सिद्धांत की परिभाषा, अवधारणा और भेदों से परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी अलंकार सिद्धांत की अवधारणा, प्रमुख अलंकारों की परिभाषा एवं उनके उदाहरण को समझ सकेंगे। वे विभिन्न छंदों की परिभाषा, तत्व, वर्गीकरण एवं प्रमुख छंदों के लक्षण एवं उदाहरण से भी परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के संक्षिप्त इतिहास, काव्य लक्षण, हेतु, प्रयोजन, प्रकार, गुण दोष, शब्द शक्तियों और काव्य भेद से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियोंको रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति संबंधी विभिन्न अवधारणाओं तथा साधारणीकरण की अवधारणा की जानकारी प्राप्त हुई।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी ध्वनि सिद्धांत, रीति सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत तथा औचित्य सिद्धांत की परिभाषा, अवधारणा और भेदों से परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी अलंकार सिद्धांत की अवधारणा, प्रमुख अलंकारों की परिभाषा एवं उनके उदाहरण को समझ सके। वे विभिन्न छंदों की परिभाषा, तत्व, वर्गीकरण एवं प्रमुख छंदों के लक्षण एवं उदाहरण से भी परिचित हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	भारतीय काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास; प्रमुख आचार्यों का परिचय; काव्य लक्षण; काव्य हेतु; काव्य प्रयोजन; काव्य के प्रकार; काव्य के गुण-दोष; शब्द-शक्तियाँ;	30	C1

	काव्य-भेद।		
2	**रस सिद्धान्त :** रस: अवधारणा; रस निष्पत्ति: भट्ट लोल्लट; भट्ट शंकुक; भट्टनायक; अभिनवगुप्त; साधारणीकरण की अवधारणा: भट्टनायक; अभिनवगुप्त; रामचन्द्र शुक्ल; डॉ. नगेन्द्र।	30	C2
3	**विभिन्न काव्य सिद्धान्त :** ध्वनि सिद्धान्त: ध्वनि की परिभाषा तथा उसका भेद; ध्वनि सिद्धांत की मूल स्थापनाएं: रीति सिद्धान्त: रीति सिद्धान्त की मूल स्थापनाएं;रीति का अर्थ; रीति के भेद: वक्रोक्ति सिद्धान्त: वक्रोक्ति की अवधारणा; वक्रोक्ति के भेद: औचित्य सिद्धान्त: औचित्य की अवधारणा तथा उसके भेद।	30	C3
4	**अलंकार सिद्धांत :** अलंकार सिद्धान्त की अवधारणा, अलंकारों का सोदाहरण परिचय –अनुप्रास, श्लेष,प्रतीप, निदर्शना, अप्रस्तुत प्रशंसा, काव्यलिंग, विभावना, अपह्नुति, रूपकातिशयोक्ति तथा विरोधाभास। **छन्द :**छन्द की परिभाषा और तत्व, छन्दों का वर्गीकरण; काव्य में छन्दों का महत्व। छन्दों के लक्षण और उदाहरण- वंशस्थ, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता, क्रीड़ित, कवित्त, दोहा, चौपाई,हरिगीतिका, कुण्डलिया तथाछप्पय।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO2	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO3	2	3	3	2	3	2	3	3	1
CO4	2	3	3	2	3	2	3	3	1
Average	2	3	3	2	3	2	3	3	1

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश:

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे । 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4=20

सहायक ग्रंथ

1. हिस्ट्री आफ संस्कृत पोयटिक्स - पी.बी. काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. साहित्य शास्त्र - गणेश त्र्यम्बक देशपाण्डे, पापुलर बुक डिपो, पूना।
3. भारतीय काव्यशास्त्र - सत्यदेव चौधरी।
4. काव्यशास्त्र की भूमिका - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
5. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

6. रस सिद्धान्त - डॉ. नगेन्द्र
7. हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास - भगीरथ मिश्र
8. काव्य शास्त्र - भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. साहित्य शास्त्र और काव्य भाषा - डॉ. सियाराम तिवारी।
10. काव्य समीक्षा - डॉ. विक्रमादित्य राय।
11. लिटेरेरी क्रिटिसिज्म - राय एण्ड द्विवेदी, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।
12. नई समीक्षा के प्रतिमान - डॉ. निर्मला जैन
13. काव्य के तत्व - देवेन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
14. साहित्य मीमांसा के आयाम - डॉ. श्याम शंकर सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली।
15. सुगम भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. धर्मदेव तिवारी शास्त्री, चन्द्रमुखी प्रकाशन, दिल्ली
16. काव्यशास्त्र विमर्श - डॉ. कृष्ण प्रसाद नारायण मागध, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
17. पंडितराज जगन्नाथ - पी. रामचंद्रुदु , साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. मम्मट - जगन्नाथ पाठक, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
19. राजशेखर - प्रभुनाथ द्विवेदी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
20. क्षेमेन्द्र - ब्रजमोहन चतुर्वेदी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. संस्कृत काव्यशास्त्र और काव्य परम्परा - राधावल्लभ त्रिपाठी

प्रथम सत्र

CDOE-HIN-101-CC-5140

कहानी एवं अन्य गद्य विधाएँ

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि :80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत परीक्षा : 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजेंद्रबाला घोष, माधवराव सप्रे, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र तथा फणीश्वरनाथ रेणु की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी निर्मल वर्मा, अज्ञेय, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, शेखर जोशी तथा ज्ञानरंजन की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित रेखाचित्रों और संस्मरणों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित जीवनी 'आवारा मसीहा' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही जीवनी साहित्य के तत्वों से भी परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी राजेंद्रबाला घोष, माधवराव सप्रे, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र तथा फणीश्वरनाथ रेणु की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी निर्मल वर्मा, अज्ञेय, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, शेखर जोशी तथा ज्ञानरंजन की चयनित कहानियों के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही रचनाकारों की कहानी कला से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी चयनित रेखाचित्रों और संस्मरणों के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित जीवनी 'आवारा मसीहा' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही जीवनी साहित्य के तत्वों से भी परिचित हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	**कहानी**	30	C1

	राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) : दुलाईवाली माधवराव सप्रे : एक टोकरी भर मिट्टी प्रेमचंद : दुनिया का सबसे अनमोल रतन जयशंकर प्रसाद : आकाशदीप जैनेन्द्र : अपना-अपना भाग्य फणीश्वरनाथ रेणु : लाल पान की बेगम		
2	**कहानी** निर्मल वर्मा : परिन्दे अज्ञेय : गैंग्रीन भीष्म साहनी : अमृतसर आ गया कृष्णा सोबती : सिक्का बदल गया शेखर जोशी : कोसी का घटवार ज्ञानरंजन : पिता	30	C2
3	**रेखाचित्र और संस्मरण** (क). अतीत के चलचित्र : महादेवी वर्मा पाठ्य रचनाएँ : रामा; भाभी (ख). माटी की मूरतें : रामवृक्ष बेनीपुरी पाठ्य रचनाएँ : बलदेव सिंह; सरजू भैया (ग). संस्मरण और रेखाचित्र : सं.- उर्मिला मोदी ; अनुराग प्रकाशन, वाराणसी पाठ्य रचना : महाकवि जयशंकर प्रसाद- शिवपूजन सहाय	30	C3
4	**जीवनी** मसीहा (विद्यार्थी संस्करण) : विष्णु प्रभाकर	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रंथ:-

1. हिन्दी कहानी का विकास - मधुरेश, लोकभारती , दिल्ली।
2. हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग-I, II,III और IV - गोपाल राय, राजकमल, दिल्ली
3. हिन्दी कहानी: पहचान और परख - इन्द्रनाथ मदान
4. कहानी : नई कहानी - डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद।
5. नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति - सं. देवीशंकर अवस्थी, राजकमल, दिल्ली।
6. समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य - रामस्वरूप चतुर्वेदी,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. हिन्दी जीवनी साहित्य: सिद्धान्त और अध्ययन - डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, परिमल प्रकाशन
8. हिन्दी गद्य का विकास - डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. निर्मल वर्मा - कृष्णदत्त पालीवाल, साहित्य अकादेमी
10. प्रेमचन्द - कमलकिशोर गोयनका, साहित्य अकादेमी
11. फणीश्वर नाथ 'रेणु' - सुरेन्द्र चौधरी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12. भीष्म साहनी - रमेश उपाध्याय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
13. अज्ञेय का कथा साहित्य - चंद्रकांत बान्दिवडेकर
14. शेखर जोशी: कुछ जीवन की कुछ लेखन की - नवीन जोशी, नवारुण प्रकाशन
15. शेखर जोशी : कथा समग्र - नवीनचन्द्र जोशी

प्रथम सत्र

CDOE-HIN-101-RC-5110

शोध प्रविधि

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत परीक्षा: 80

उद्देश्य - Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुसंधान के अर्थ, स्वरूप, प्रकार, अनुसंधानऔर आलोचना के सम्बन्ध तथा अनुसंधानकर्ता के गुणों आदि से अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुसंधान की विभिन्न प्रविधियों, यथा -ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, पाठानुसन्धान,भाषा वैज्ञानिक, तुलनात्मक तथा सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान प्रविधि से अवगत हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी क्षेत्र सर्वेक्षण, प्रश्नावली निर्माण एवं अनुसूची, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (केस अध्ययन विधि), निदर्शन सिद्धांत, सारणीयन, विषयवस्तु विश्लेषण, एकांश लेखन एवं विश्लेषण से परिचित हो सकेंगे, साथ ही हस्तलेखों के संकलन और उनके उपयोग की विधि को जान सकेंगे।

LO4. विद्यार्थी शोध के विभिन्न सोपानों तथा शोध-प्रारूप के निर्माण एवं लेखन की विधियों से भली-भाँति परिचित हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुसंधान के अर्थ, स्वरूप, प्रकार, अनुसंधानऔर आलोचना के सम्बन्ध तथा अनुसंधानकर्ता के गुणों आदि से अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को अनुसंधान की विभिन्न प्रविधियों, यथा -ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, पाठानुसन्धान,भाषा वैज्ञानिक, तुलनात्मक तथा सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान प्रविधि का ज्ञान प्राप्त हुआ।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी क्षेत्र सर्वेक्षण, प्रश्नावली निर्माण एवं अनुसूची, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (केस अध्ययन विधि), निदर्शन सिद्धांत, सारणीयन, विषयवस्तु विश्लेषण, एकांश लेखन एवं विश्लेषण से परिचित हुए, साथ ही हस्तलेखों के संकलन और उनके उपयोग की विधियों को जान सके।

CO4. विद्यार्थी शोध के विभिन्न सोपानों तथा शोध-प्रारूप के निर्माण एवं लेखन की विधियों से भली-भाँति परिचित हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि	उपलब्धियाँ (Course Outcome)
1	अनुसंधानः अर्थ एवं स्वरूप ; साहित्यिक अनुसंधान, सामाजिक अनुसंधान एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान; अनुसंधान के प्रकार : स्वतन्त्र अनुसन्धान, संस्थागत अनुसन्धान, साहित्यिक शोध के प्रकार,तथ्यानुसन्धान और तथ्य परीक्षण, अनुसंधानऔर आलोचना, अनुसंधानकर्ता के गुण।	30	C1
2	अनुसंधान प्रविधियां :ऐतिहासिक अनुसंधान प्रविधि; समाजशास्त्रीय अनुसंधान प्रविधि; पाठानुसन्धान प्रविधि; भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान प्रविधि; तुलनात्मक अनुसंधान प्रविधि; सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान प्रविधि।	30	C2
3	क्षेत्र सर्वेक्षण, प्रश्नावली निर्माण एवं अनुसूची, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति (केस अध्ययन विधि), निदर्शन सिद्धांत, सारणीयन, विषयवस्तु विश्लेषण, एकांश लेखन एवं विश्लेषण, हस्तलेखों का संकलन और उनका उपयोग।	30	C3
4	शोध के सोपान, शोध प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुति : शोध प्रबन्ध का शीर्षक; परिकल्पना; रूपरेखा निर्माण; अध्यायीकरण; भूमिका लेखन; विषय सूची; विषय वस्तु ; संदर्भ लेखन ; उद्धरण : उपयोग और प्रस्तुति; संदर्भोल्लेख तथा पाद टिप्पणी; उद्देश्य, उपसंहार; परिशिष्ट ; आधार ग्रंथ; सन्दर्भ ग्रन्थ; सहायक ग्रन्थ; पत्र-पत्रिकाएं।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	2	1	3	2	2	1	3
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2

Average	2.25	2.75	1.25	2.50	2.25	2	1.25	2.50	2.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4= 20

सहायक ग्रंथः

1. शोध प्रविधि - विनयमोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान - एस. एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
3. साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान - देवराज उपाध्याय
4. शोध और सिद्धान्त - नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
5. हिन्दी अनुसंधान - विजयपाल सिंह, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
6. अनुसंधान की प्रक्रिया - सं. सावित्री सिन्हा तथा विजयेन्द्र स्नातक
7. अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया - राजेन्द्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
8. अनुसंधान का स्वरूप - सं. सावित्री सिन्हा
9. शोध प्रविधि - रामगोपाल शर्मा दिनेश, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
10. पाठानुसंधान - डॉ. सियाराम तिवारी, विशाल पब्लिकेशन, पटना
11. शोध प्रविधि – रामकुमार खण्डेलवाल, चन्द्रकान्त रावत, जवाहर पब्लिकेशन, मथुरा
12. अनुसन्धान के विविध आयाम – रवीन्द्र कुमार जैन, शशिभूषण सिंहलराजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकुला
14. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका - मैनेजर पाण्डेय
15. पाण्डुलिपि विज्ञान - रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
16. The Literary Thesis - George Watson, Longman.
17. How to Write Assignments Research Topics, Dissertations and Thesis – V.H.Bedekar, Kanak Publications,New Delhi.
18. The Art of Literary Research - R. D Altik, Newyork.
19. Introduction to Research - T. Helway.
20. The Methodology of Field Investigation in Linguistics. - A. E. Kilerik.

द्वितीय सत्र

द्वितीय सत्र

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

CDOE-HIN-101-CC-5210

हिंदी साहित्य का इतिहास: आधुनिक काल

पूर्णांक	: 100
अभ्यन्तर	: 20
सत्रांत परीक्षा	: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और 1857 की क्रांति, पुनर्जागरण, आधुनिकता बोध, भारतेंदु युग के अवदान और भारतेंदु मंडल के कवियों की काव्य भाषा और मूल चेतना से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को द्विवेदी युगीन हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका, राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदतावाद और द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता की जानकारी प्राप्त होगी।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियों और सैद्धांतिकी से परिचित हो सकेंगे। वे प्रमुख छायावादी कवियों की रचनाओं और उनकी काव्य कला का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को छायावादोत्तर काव्य आंदोलनों की जानकारी प्राप्त होगी।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियों और 1857 की क्रांति, पुनर्जागरण, आधुनिकता बोध, भारतेंदु युग के अवदान और भारतेंदु मंडल के कवियों की काव्य भाषा और मूल चेतना से परिचित हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को द्विवेदी युगीन हिंदी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका, राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदतावाद और द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता की जानकारी प्राप्त हुई।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियों और सैद्धांतिकी से परिचित हुए। वे प्रमुख छायावादी कवियों की रचनाओं और उनकी काव्य कला का अध्ययन कर सके।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को छायावादोत्तर काव्य आंदोलनों की जानकारी प्राप्त हुई।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	आधुनिक काल की पृष्ठभूमि: सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ; 1857 की क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण; आधुनिकता बोध का विकास, हिन्दी काव्य को भारतेन्दु युग का अवदान; भारतेन्दु मण्डल के कवि तथा अन्य कवि; काव्य भाषा की चेतना और भारतेन्दु युग; भारतेन्दु युगीन कविता की मूल चेतना और विशेषताएँ।	30	C1
2	द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि ; द्विवेदी युगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता।	30	C2
3	छायावाद : पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियां और सैद्धांतिकी; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र, नामवर सिंह, रामविलास शर्मा; प्रमुख छायावादी कवि और उनका काव्य; छायावादकालीन अन्य कवि और उनका काव्य; नवजागरण और छायावाद; छायावादी काव्य-भाषा का स्वरूप।	30	C3
4	छायावादोत्तर काव्यान्दोलन और काव्य : प्रगतिवाद; प्रयोगवाद; नई कविता; अकविता; नवगीत; जनवादी कविता; समकालीन कविता; दलित-चेतना, स्त्री-चेतना और जनजातीय चेतना की कविताएं।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि ।

निर्देश :

1. इस पत्र की प्रत्येक इकाई से दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15x4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x4=20

सहायक ग्रंथ :

1 . हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

2. हिन्दी साहित्य की भूमिका - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

4. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास - हजारीप्रसाद द्वविदी, राजकमल, दिल्ली।

5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1,2 - विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।

7. हिन्दी साहित्य का इतिहास - सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

8. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।

9. हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी - नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रका. इलाहाबाद।

10. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन - नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

11. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास प्रथम एवं द्वितीय खंड - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रका, इलाहाबाद।

12. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - रामकुमार वर्मा

13. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास - सुमन राजे, ज्ञानपीठ, दिल्ली

14. हिन्दी साहित्य : बीसवी शताब्दी - नन्द दुलारे वाजपेयी

15. हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष - शिवदान सिंह चौहान

16. झारखण्ड : अन्धेरे से साक्षात्कार - डॉ. अभिषेक कुमार यादव, मीडिया स्टडीज, नई दिल्ली

17. भारतेंदु हरिश्चन्द्र - मदनगोपाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

18. महावीर प्रसाद द्विवेदी - नंद किशोर नवल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

19. श्रीधर पाठक - रघुवंश, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

20. सुमित्रानंदन पंत - कृष्ण दत्त पालीवाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

द्वितीय सत्र

CDOE-HIN-101-DE-52010

सगुण भक्ति काव्य एवं रीति काव्य

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सूरदास की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे एवं भ्रमरगीत की परंपरा और उसकी विशेषताओं की समीक्षा कर सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी तुलसीदास की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे तथा उनकी भक्ति-भावना, समन्वय-भावना और काव्य-कला से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी मीराबाई की चयनित पदावलियों की व्याख्या कर सकेंगे तथा कृष्णभक्ति काव्य-परंपरा में मीराबाई का स्थान, उनकी स्त्री-चेतना, विरह-वेदना और काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी घनानंद और बिहारी की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे रीतिमुक्त काव्यधारा, घनानंद की विरह-वेदना और उनकी कविताओं की शिल्पगत विशेषता, बिहारी की सौंदर्य चेतना और काव्य कला से परिचित होंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने सूरदास की चयनित कविताओं की व्याख्या की एवं भ्रमरगीत की परंपरा और उसकी विशेषताओं की समीक्षा की।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी तुलसीदास की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके तथा उनकी भक्ति भावना, समन्वय भावना और काव्य कला से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी मीराबाई की चयनित पदावलियों की व्याख्या कर सके तथा कृष्णभक्ति काव्य परंपरा में मीराबाई का स्थान, उनकी स्त्री-चेतना, विरह-वेदना और उनकी काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन भी किया।

CO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी घनानंद और बिहारी की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। वे रीतिमुक्त काव्यधारा, घनानंद की विरह-वेदना और उनकी कविताओं की शिल्पगत विशेषता, बिहारी की सौंदर्य चेतना और काव्य-कला से परिचित हुए।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	**सूरदास**: पाठ्य पुस्तक: भ्रमरगीत सार; संपादक- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पाठांशपदसंख्या – 9,23,25,34,62,64,65,82,85,87,95,97,115,120,130, 138,172,278 आलोचना : भ्रमरगीत परम्परा और सूरदास, गोपियों का विरह वर्णन, भ्रमरगीत की विशेषताएँ, सूरदासकी काव्यगत विशेषताएँ।	30	C1
2	**तुलसीदास** पाठ्य पुस्तक : रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर पाठ्यांश : उत्तर काण्ड दोहा संख्या - 3 से 18 तक आलोचना: तुलसीदास की भक्ति-भावना, तुलसीदास की समन्वय भावना, उत्तरकाण्ड का प्रतिपाद्य,तुलसीदास की काव्य-कला।	30	C2
3	**मीराबाई** पाठ्य पुस्तक : मीराबाई की पदावली : सं. परशुराम चतुर्वेदी पाठांशपद सं- 17,18, 20, 22, 23, 35, 36, 41, 46,116,118,146,158,175,199, 200 आलोचना: कृष्ण काव्य परम्परा में मीराबाई का स्थान, मीराबाई और स्त्री चेतना, मीराबाई की विरह- वेदना, मीराबाई की काव्यगत विशेषताएँ।	30	C3
4	**घनानंद** पाठ्य पुस्तक : घनानन्द कवित्त; सं.- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पाठांशपदसं.- 6 से 21 तक आलोचना: रीतिमुक्त काव्यधारा और घनानंद, प्रेम कीपीर के कवि घनानंद, घनानंद के काव्य की शिल्पगत विशेषताएँ। **बिहारी** पाठ्य पुस्तक : बिहारी रत्नाकर; सं.- जगन्नाथदास रत्नाकर पाठ्यदोहा सं.- 25,32,38,42,46,48,51,58,60,61,69,73,94,121,131,141,181,300 तथा 363 ा: सतसई परम्परा और बिहारी, बिहारी की सौन्दर्य चेतना, बिहारी की ला।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2

CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश :

1.प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8x4 =32

2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रंथः-

1. सूरदास - रामचन्द्र शुक्ल, ना. प. सभा, काशी।
2. सूर साहित्य - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय - डॉ. दीनदयाल गुप्त, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग।
4. सूर और उनका साहित्य - डॉ. हरवंश लाल शर्मा, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ ।
5. सूरदास - नंददुलारे वाजपेयी।
6. गोस्वामी तुलसीदास - रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
7. तुलसी और उनका युग - डॉ. राजपति दीक्षित, ज्ञानमंडल, काशी।
8. तुलसी-साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ - डॉ. हरीशकुमार शर्मा, साहित्य सहकार प्रकाशन,दिल्ली।
9. रामकथा का विकास - कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद्, प्रयाग।
10. बिहारी की वाग्विभूति - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी।
11. बिहारी का नया मूल्यांकन - डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद ।
12. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा - डॉ. मनोहर लाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
13.घनानन्द का काव्य - डॉ. रामदेव शुक्ल, लोकभारती, इलाहाबाद।
14. परमानंद दास का काव्य-शिल्प - डॉ. शशिबाला शर्मा, साहित्य सहकार, दिल्ली।
15. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य - मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
16. मीरा का काव्य - विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
17. मीराबाई - डॉ. सी.एल. प्रभात
18. रामचरितमनस में नारी - डॉ. सुशील कुमार शर्मा, साहित्य सहकार प्रकाशन
19. रीतिकाव्य की भूमिका - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
20. बिहारी - बच्चन सिंह, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21. मीराबाई - ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

अधिगम अवधि: 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

द्वितीय सत्र

CDOE-HIN-101-DE-52020

आधुनिक काव्य

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर: 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। साथ ही प्रियप्रवास के महाकाव्यत्व, प्रियप्रवास की राधा, उसकी काव्यगत विशेषताओं तथा साकेत में अभिव्यक्त आधुनिक स्त्री संवेदना, उर्मिला के विरह वर्णन और उसकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे छायावादी काव्य मूल्य, प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक चेतना, निराला की 'राम की शक्ति पूजा' का प्रतिपाद्य, उनके आत्म-संघर्ष और काव्य-वैशिष्ट्य का अध्ययन कर सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे पंत के प्रकृति चित्रण और उनकी काव्यगत विशेषताओं तथा महादेवी वर्मा की रहस्य-भावना, पीड़ा और वेदना तथा काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।

LO4- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हरिवंशराय बच्चन और रामधारी सिंह 'दिनकर' की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे। वे 'निशा-निमंत्रण' के प्रतिपाद्य, हालावाद और बच्चन की काव्यगत विशेषताओं तथा दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीयता, 'रश्मिरथी' का प्रतिपाद्य तथा उसके अंतर्वस्तु और शिल्प को जान सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और मैथिलीशरण गुप्त की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। साथ ही प्रियप्रवास के महाकाव्यत्व, प्रियप्रवास की राधा, उसकी काव्यगत विशेषताओं तथा साकेत में अभिव्यक्त आधुनिक स्त्री संवेदना, उर्मिला के विरह वर्णन और उसकी काव्यगत विशेषताओं से परिचित हुए।

CO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। उन्होंने छायावादी काव्य मूल्य, प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक चेतना, निराला की 'राम की शक्ति पूजा' का प्रतिपाद्य, उनके आत्म-संघर्ष और काव्य-वैशिष्ट्य का अध्ययन किया।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। उन्होंने पंत के प्रकृति चित्रण और उनकी काव्यगत विशेषताओं तथा महादेवी वर्मा की रहस्य-भावना, पीड़ा और वेदना तथा काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन किया।

CO4- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हरिवंशराय बच्चन और रामधारी सिंह दिनकर की चयनित कविताओं की व्याख्या कर सके। वे 'निशा-निमंत्रण' के प्रतिपाद्य, हालावाद और बच्चन की काव्यगत विशेषताओं तथा दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीयता, रश्मिरथी का प्रतिपाद्य तथा उसके अंतर्वस्तु और शिल्प को जान पाए।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	**अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'** पाठ्य कविता : प्रियप्रवास; षष्ठ सर्ग; छन्द सं.- 26 से 83 आलोचना: प्रियप्रवास का महाकाव्यत्व ; प्रियप्रवास की राधा, हरिऔध की काव्यगत विशेषताएँ। **मैथिलीशरण गुप्त** पाठांश – साकेत का नवम् सर्ग प्रथम खंड: पंक्ति - दो वंशों में प्रकट करके पावनी लोक-लीला .... से.... प्रिय ही नहीं यहाँ मैं भी थी, और एक संसार भी! आलोचना:उर्मिला का विरह-वर्णन, साकेत में अभिव्यक्त आधुनिक स्त्री संवेदना, साकेत के नवम् सर्ग के सन्दर्भ में गुप्तजी की काव्यगत विशेषताएं।	30	C1
2	**जयशंकर प्रसाद** पाठांश- 'कामायनी' का इड़ा सर्ग आलोचना : छायावादी काव्य मूल्य और जयशंकर प्रसाद; प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना;कामायनी में व्यक्त दार्शनिक चेतना। **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** पाठ्य कविता – राम की शक्ति-पूजा । आलोचना: राम की शक्ति-पूजा का प्रतिपाद्य; राम की शक्ति-पूजा और निराला का आत्मसंघर्ष,निराला का काव्य-वैशिष्ट्य।	30	C2
3	**सुमित्रानंदन पंत** पाठ्य कविता: परिवर्तन, नौका विहार पाठ्य पुस्तक - छायावाद के प्रतिनिधि कवि – डॉ. विजयपाल सिंह आलोचना: पन्त–काव्य और छायावाद; पंत का प्रकृति-चित्रण, पन्त की काव्यगत विशेषताएँ। **महादेवी वर्मा** पाठ्य कविताएं – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मन्दिर का दीप ।	30	C3

	पाठ्य पुस्तक- छायावाद के प्रतिनिधि कवि – डॉ. विजयपाल सिंह आलोचना : महादेवी की रहस्य भावना, पीड़ा और वेदना, महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताएं।		
4	**हरिवंशराय बच्चन** पाठ्य रचना – निशा-निमंत्रण के प्रथम चार गीत आलोचना: निशा-निमंत्रण का प्रतिपाद्य,हालावाद और हरिवंशराय बच्चन, हरिवंशराय बच्चन की काव्यगत विशेषताएं। **रामधारी सिंह 'दिनकर'** पाठ्यांश – रश्मिरथी (तृतीय सर्ग) आलोचना: 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीयता,रश्मिरथी का प्रतिपाद्य,रश्मिरथी की अंतर्वस्तु और शिल्प।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रन्थ :

1. साकेत : एक अध्ययन - डॉ. नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
2. साकेत के नवम सर्ग का काव्य वैभव - कन्हैयालाल सहल, हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली।
3. जयशंकर प्रसाद - नन्ददुलारे वाजपेयी।
4. प्रसाद और उनका साहित्य - विनोद शंकर व्यास
5. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला - डॉ रामेश्वर खण्डेलवाल।
6. प्रसाद का काव्य - डॉ. प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. निराला की साहित्य साधना, भाग 1,2,3 - डॉ. रामविलास शर्मा
8. निराला एक आत्महन्ता आस्था - दूधनाथ सिंह, लोक भारती, इलाहाबाद।
9. छायावाद - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. क्रांतिकारी कवि निराला - डॉ. बच्चन सिंह
11. कामायनी अनुशीलन - रामलाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।

12. राम की शक्तिपूजा - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
13. महादेवी का काव्य सौष्ठव - कुमार विमल, अनुपम प्रकाशन, पटना।
14. महादेवी - दूधनाथ सिंह, राजकमल, इलाहाबाद ।
15. कवि सुमित्रानंदन पंत - नंद दुलारे वाजपेयी, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
16. सुमित्रानंदन पंत : कवि और काव्य - शारदालाल प्रकाशन, दिल्ली ।
17. महादेवी - इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
18. हरिऔध के महाकाव्यों की नारी पात्र - रेणु श्रीवास्तव, अमन प्रकाशन, कानपुर ।
19. दिनकर का कुरुक्षेत्र और मानवतावाद - डॉ. मोहसिन खान
20. पन्त की दार्शनिक चेतना - डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त, प्रकाश बुक डिपो, बरेली

द्वितीय सत्र

CDOE-HIN-101-DE-52030

हिन्दी नाटक एवं निबंध

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट: 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे। आधुनिक हिंदी नाटक की परंपरा तथा पठित नाटक में चित्रित समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भुवनेश्वर की एकांकी – 'स्ट्राइक', उपेंद्रनाथ 'अश्क' की एकांकी- 'सूखी डाली' तथा जगदीशचंद्र माथुर की एकांकी – 'भोर का तारा' के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे तथा समीक्षा कर सकेंगे, साथ ही चयनित एकांकीकारों की एकांकी-कला से भी परिचित हो सकेंगे।

LO3. विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, रामचंद्र शुक्ल और हरिशंकर परसाई की निबंध-शैली से परिचित हो सकेंगे और पठित निबंधों के प्रतिपाद्य को जान सकेंगे।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी ललित निबंध की परिभाषा एवं उसकी विशेषताओं को जान सकेंगे तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, विवेकी राय और नामवर सिंह की निबंध-शैली से परिचित हो सकेंगे तथा पठित निबंधों की व्याख्या एवं समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की। आधुनिक हिंदी नाटक की परंपरा तथा पठित नाटक में चित्रित समस्याओं से परिचित हुए।

LO2. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी भुवनेश्वर की एकांकी –'स्ट्राइक', उपेंद्रनाथ 'अश्क' की एकांकी- 'सूखी डाली' तथा जगदीशचंद्र माथुर की एकांकी – 'भोर का तारा' के प्रतिपाद्य को जान सके तथा समीक्षा की, साथ ही चयनित एकांकीकारों की एकांकी-कला से भी परिचित हुए।

LO3. विद्यार्थी भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, रामचंद्र शुक्ल और हरिशंकर परसाई की निबंध-शैली से परिचित हुए और पठित निबंधों के प्रतिपाद्य को जान सके।

LO4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी ललित निबंध की परिभाषा एवं उसकी विशेषताओं को जान सके तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, विवेकी राय और नामवर सिंह की निबंध-शैली से परिचित हुए तथा पठित निबंधों की व्याख्या एवं समीक्षा की।

इकाई	विषय	संवाद अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	**नाटक** आषाढ़ का एक दिन : मोहन राकेश आलोचना : आधुनिक हिंदी नाटक और मोहन राकेश,नाटक की समीक्षा, पठित नाटक में चित्रित समस्याएँ।	30	C1
2	**एकांकी** स्ट्राइक – भुवनेश्वर सूखी डाली - उपेन्द्रनाथ 'अश्क' भोर का तारा - जगदीशचन्द्र माथुर आलोचना : चयनित एकांकीकारों की एकांकी-कला, एकांकी के तत्वों के आधार पर समीक्षा, प्रतिपाद्य।	30	C2
3	**निबंध** भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है : भारतेन्दु एक दुराशा : बालमुकुन्द गुप्त उत्साह : रामचन्द्र शुक्ल पगडण्डियों का जमाना : हरिशंकर परसाई आलोचना बिंदु: चयनित निबंधकारों की निबंध शैली, पठित निबंधों का प्रतिपाद्य।	30	C3
4	**ललित निबंध** कुटज : हजारीप्रसाद द्विवेदी मेरे राम का मुकुट भीग रहा है : विद्यानिवास मिश्र उठ जाग मुसाफिर : विवेकी राय संस्कृति और सौन्दर्य : नामवर सिंह आलोचना : ललित निबंध की परिभाषा एवं विशेषताएँ, चयनित निबंधकारों की निबंध शैली,पठित निबंधों का प्रतिपाद्य।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	3	1	3	2	2	1	3	2

CO2	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO3	2	3	1	3	2	2	1	3	2
CO4	2	3	1	3	2	2	1	3	2
Average	2	3	1	3	2	2	1	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32
2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
2. रंग दर्शन - नेमिचन्द्र जैन
3. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – हजारीप्रसाद द्विवेदी राजकमल, दिल्ली ।
4. रामचन्द्र शुक्ल – मलयज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. हिन्दी नाटक - बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
6. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
7. हिन्दी : विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन
8. मोहन राकेश और उनके नाटक – गिरीश रस्तोगी, लोक भारती ।
9. हिन्दी ललित निबन्ध : स्वरूप विवेचन – वेदवती राठी, लोक भारती ।
10. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण – विजयमोहन सिंह, ज्ञानपीठ ।
11. हिन्दी का गद्य पर्व – नामवर सिंह, राजकमल ।
12. हजारीप्रसाद द्विवेदी: समग्र पुनरावलोकन – चौथीराम यादव, लोकभारती ।
13. दो रंगपुरुष - डॉ. जमुना बीनी तादर, रीडिंग रूम्स, दिल्ली
14. अध्यापक पूर्ण सिंह - रामचन्द्र तिवारी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
15. जगदीश चन्द्र माथुर - सत्येन्द्र कुमार तनेजा, साहित्य अकादेमी
16. भुवनेश्वर - गिरीश रस्तोगी, साहित्य अकादेमी
17. मोहन राकेश - प्रतिभा अग्रवाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
18. हरिशंकर परसाई - विश्वनाथ त्रिपाठी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

द्वितीय सत्र

CDOE-HIN-101-RC-5210

शोध एवं प्रकाशन नैतिकता

अधिगम अवधि : 120

क्रेडिट : 4

व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100

अभ्यन्तर : 20

सत्रांत: 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दर्शन की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्रएवं प्रकार से परिचित हो सकेंगे। नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक-दर्शनतथा नैतिक निर्णय के स्वरूप से भी अवगत हो सकेंगे।

LO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी प्रकाशन संबंधी नैतिकता एवं उसकी परिभाषा, स्वरूप तथा महत्व से परिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी प्रकाशन दुराचार की परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से भी अवगत हो सकेंगे, साथ ही विद्यार्थी अनुसंधान एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता से परिचित हो सकेंगे।

LO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध आलेख प्रकाशन, शोध प्रबंध प्रकाशन तथा साहित्यिक चोरी के संबंध में समझ विकसित कर सकेंगे, साथ ही पत्रिका तथा लेख खोजने के उपकरणों जैसे- JANE, इल्जवेयरजर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टरआदि से भी परिचित हो सकेंगे।

LO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यिक चोरी निरोधक उपकरणों जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड, ड्रिलबिटतथा अन्य ओपन सोर्ससॉफ्टवेयर के उपयोग की प्रक्रिया को जान सकेंगे, साथ ही प्रकाशनार्थ शोध आलेख लेखन का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दर्शन की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकार से परिचित हुए। नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक-दर्शन तथा नैतिक निर्णय के स्वरूप से भी अवगत हुए।

CO2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी प्रकाशन संबंधी नैतिकता एवं उसकी परिभाषा, स्वरूप तथा महत्व से परिचित हुए। विद्यार्थी प्रकाशन दुराचार की परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न होने वाली

समस्याओं से भी अवगत हुए, साथ ही विद्यार्थी अनुसंधान एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता से परिचित हुए।

CO3. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी शोध आलेख प्रकाशन, शोध प्रबंध प्रकाशन तथा साहित्यिक चोरी के संबंध में समझ विकसित कर सके, साथ ही पत्रिका तथा लेख खोजने के उपकरणों जैसे- JANE, इल्जवेयरजर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टरआदि से भी परिचित हुए।

CO4. इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यिक चोरी निरोधक उपकरणों जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड,ड्रिलबिट तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के उपयोग की प्रक्रिया को जान सके, साथ ही प्रकाशनार्थ शोध आलेख लेखन का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सके।

इकाई	**विषय**	**संवाद अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ (Course Outcome)**
1	**दर्शन और नीतिशास्त्र** क. दर्शन:परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्रएवं प्रकार। ख. नीतिशास्त्र : परिभाषा, नैतिक-दर्शनतथा नैतिक निर्णय का स्वरूप। **वैज्ञानिक आचरण :** क.विज्ञान एवं शोध के संबंध में नैतिकता : बौद्धिक ईमानदारी एवं शोध अखंडता। ख. वैज्ञानिक दुराचार : मिथ्यायीकरण, छल-रचनाएवं साहित्यिक चोरी। ग. प्रकाशन में बेईमानी: डुप्लीकेट एवं ओवरलैपिंग प्रकाशन। घ. चयनात्मक रिपोर्टिंग तथा आंकड़ों की अशुद्ध व्याख्या।	30	C1
2	**प्रकाशन संबंधी नैतिकता :** क. परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व। ख. श्रेष्ठ अभ्यास, मानक सेटिंग पहलएवं दिशा-निर्देश : COPE, WAME इत्यादि। ग. अभिरूचियों में अंतर्विरोध **प्रकाशन दुराचार** क. परिभाषा, संकल्पना एवं अनैतिक आचरणों से उत्पन्न समस्याएं। ख. प्रकाशन नैतिकता का उल्लंघन, ग्रंथकारिता तथा योगदान। ग. प्रकाशन दुराचार की पहचान, शिकायत एवं अपील। घ. फर्जी (Predatory) प्रकाशक एवं पत्रिकाएं।	30	C2
3	**प्रायोगिक कार्य** **ओपन एक्सेस पब्लिशिंग :** क. ओपन एक्सेस पब्लिकेशंस एण्ड इनिसियेटिब्स। ख. प्रकाशक की कॉपीराइटकी ऑनलाइन संसाधन SHERPA/RoMEOद्वारा जांच तथा स्वसंग्रह नीतियां। ग. फर्जी प्रकाशकों की पहचान के लिए SPPU द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर उपकरण। घ. पत्रिका खोजक / पत्रिका सुझाव उपकरण जैसे – JANE, इल्जवेयरजर्नल फाईंडर, स्प्रिंगर जर्नल सजेस्टरआदि।	30	C3
4	**प्रायोगिक कार्य** **प्रकाशन दुराचार :**	30	C4

	क. विषय केंद्रित नैतिक मुद्दे, एफ.एफ.पी., ग्रंथकारिता, अभिरूचियों में अंतरविरोध, शिकायत एवं अपील : भारत और विदेश से उदाहरण एवं धोखा। ख. सॉफ्टवेयर उपकरण : साहित्यिक चोरी के उपकरणों का उपयोग जैसे- टर्निटिन, उरकूण्ड, ड्रिलबिट तथा अन्य ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर। ग. डेटाबेस: अनुक्रम डेटाबेसतथा उद्धरण डेटाबेस जैसे – वेब ऑफ साइंस, स्कॉपस आदि। घ. रिसर्च मैट्रिक्स : जर्नल साइटेशन रिपोर्ट, एस.एन.आई.पी., एस.जे.आर., आई.पी.पी., साईट स्कोर, आदि के आधार पर पत्रिकाओं का इंपेक्ट फैक्टर ; मैट्रिक्स : एच-इंडेक्स, जी इंडेक्स,आई 10 इंडेक्स, एल्टमैट्रिक्स। ङ. अपनी रुचि के विषय पर प्रकाशनार्थ आलेख तैयार करना तथा सॉफ्टवेयर उपकरण द्वारा वैधता की जांच करना।		
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	1	2	2	3	2	2	1
CO2	2	2	1	2	2	2	2	2	3
CO3	2	2	2	3	3	2	2	3	3
CO4	2	2	2	3	3	2	2	3	3
Average	2.25	2	1.50	2.50	2.50	2.25	2	2.50	2.50

कार्य-सम्पादन- पद्धति: व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा, आलेख-लेखन तथा प्रस्तुतीकरण आदि।
(सत्रांत परीक्षा/प्रायोगिक/आंतरिक परीक्षा): [40/40/20]

निर्देशः

1. इकाई एक और दो से प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15X 2 = 30
2. इकाई एक और दो से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5x2= 10
3. 40 (चालीस) अंक की प्रायोगिक परीक्षा होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Beall, J. (2012). Predatory Publishers are corrupting open access. Nature, 489 (7415), 179-179. https://doi.org/10.1038/489179a
2. Bird, A. (2006). Philosophy of Science. Routledge.

3. Indian National Science Academy (INSA), Ethics in Since, Research and Governance (2019), ISBN_ 978-81-939482-1-7.http://www.insaindia.res.in/pdf/Ethics_Books.pdf
4. Maclntyre, Alasdair (1967), A Short History of Ethics, London.
5. National Academy of Sciences, National Academy of Engineering and Institute of Medicine. (2009). On Being a Scientist: A Guide to Responsible Conduct in Research: Third Edition, National Academic Press.
6. P. Chaddah, (2018) Ethics in Competitive Research: Do not get scooped; do not get plagiarized, ISBN: 978-9387480865
7. Resnik, D.B. (2011). What is ethics in research & why is it important. National Institute of Environmental Health Sciences, 1-10. Retrieved from
8. https://www.niehs.nih.gov/research/resources/bioethics/whatis/index.cfm

तृतीय सत्र

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

तृतीय सत्र

CDOE-HIN-101-CW-61010

हिन्दी साहित्य का इतिहास – 3

(गद्य साहित्य एवं पत्रकारिता)

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य: Learning Objectives (LOs)

LO 1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी गद्य के उद्भव और विकास की परिस्थितियों,प्रमुख गद्यकारों तथा हिंदी गद्य के उन्नयन में विभिन्न व्यक्तिओं और संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन कर सकेंगे।

LO2.विद्यार्थी हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं के उद्भव और विकास तथा उनकी विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।

LO 3.विद्यार्थी दक्खिनी हिन्दी साहित्य तथा उर्दू साहित्य के दिल्ली केंद्र, लखनऊ केंद्र और दकन केंद्र से परिचत हो सकेंगे एवं हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के सह-सम्बन्ध तथा हिन्दी के प्रवासी साहित्य केसामान्य परिचय से अवगत हो सकेंगे।

LO 4. विद्यार्थी इस पत्र के अंतर्गत भारत में प्रेस के उदय और स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात के हिन्दी पत्रकारिता के संक्षिप्त इतिहास, हिन्दी गद्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता के योगदान को जान सकेंगे तथापूँजी और तकनीक के बढ़ते दखल के कारण हिन्दी पत्रकारिता पर पड़ने वाले प्रभाव से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियाँ: Course Outcomes (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने हिंदी गद्य के उद्भव और विकास की परिस्थितियों,प्रमुख गद्यकारों तथा हिंदी गद्य के उन्नयन में विभिन्न व्यक्तिओं और संस्थाओं की भूमिका का अध्ययन किया।

CO2.विद्यार्थियों ने हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं के उद्भव और विकास तथा उनकी विशेषताओं का अध्ययन किया।

CO3.विद्यार्थी दक्खिनी हिन्दी साहित्य तथा उर्दू साहित्य के दिल्ली केंद्र, लखनऊ केंद्र और दकन केंद्र से परिचत हुएएवंहिन्दी तथाअन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के सह-सम्बन्ध तथा हिन्दी के प्रवासी साहित्य केसामान्य परिचय से अवगत हुए।

CO4.विद्यार्थी इस पत्र के अंतर्गत भारत में प्रेस के उदय और स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात के हिन्दी पत्रकारिता के संक्षिप्त इतिहास, हिन्दी गद्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता के योगदान को जान सके तथापूँजी और तकनीक के बढ़ते दखल के कारण हिन्दी पत्रकारिता पर पड़ने वाले प्रभाव से अवगत हुए।

इकाई	**विषय**	**संवाद-अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास; आधुनिककालीन परिस्थितियों का हिन्दी गद्य के विकास में योगदान; भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य और गद्यकार; भारतेन्दु युगीन हिन्दी गद्य एवं गद्यकार; आधुनिक हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक उन्नयन में विभिन्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं की भूमिका; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का हिन्दी गद्य को अवदान; हिन्दी गद्य के विकास मेंमहावीरप्रसाद द्विवेदी की भूमिका।	30	C1
2	हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का उद्भव और विकास : नाटक, निबन्ध, उपन्यास, कहानी, एकांकी, आलोचना, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, साक्षात्कार, रिपोर्ताज, यात्रा-साहित्य तथा पत्र साहित्य	30	C2
3	दक्खिनी हिन्दी साहित्य का सामान्य परिचय; उर्दू साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय: दिल्ली केंद्र, लखनऊ केंद्र तथा दकन केंद्र, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का सह-सम्बन्ध;हिन्दी के प्रवासी साहित्य का सामान्य परिचय।	30	C3
4	भारत में प्रेस का उदय और हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ; हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास; स्वातन्त्र्य-पूर्व हिन्दी पत्रकारिता; भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका; स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता; हिन्दी गद्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान; पूँजी, तकनीक और हिन्दी पत्रकारिता।	30	C4
	कुल संवाद-अवधि	**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	3	3	2	1	2	1

CO2	3	2	3	3	3	3	2	1	1
CO3	3	2	2	3	3	3	2	1	1
CO4	3	2	2	2	3	2	1	3	2
Average	3	2.25	2.25	2.75	3	2.50	1.50	1.75	1.25

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15×4=60

2. प्रत्येक इकाई सेटिप्पणी पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे । 5×4=20

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद ।
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
5. साहित्यिक निबंध - सं. डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी ।
6. साहित्यिक निबंध – डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त, लोकभारती, इलाहाबाद ।
7. वृहद साहित्यिक निबंध – डॉ. रामसागर त्रिपाठी, डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त ।
8. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
9. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. एहतेशाम हुसैन, लोकभारती, इलाहाबाद।
10. समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
11. दक्खिनी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. इकबाल अहमद, लोकभारती, इलाहाबाद।
12. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी - पद्म सिंह शर्मा, लोकभारती, इलाहाबाद ।
13. उर्दू का आरम्भिक युग - शम्सुर्रहमान फारूकी, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद ।
14. हिंदी नवजागरण और जातीय गद्य परंपरा – कर्मेन्दु शिशिर, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला ।
15. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
16.महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
17.हिन्दी पत्रकारिता: उद्भव और विकास – विनोद गोदरे, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
18.गणेश शंकर विद्यार्थी - कृष्ण बिहारी मिश्र, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
19.गालिब - अली सरदार जाफरी, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
20.नजीर अकबराबादी - मुहम्मद हसन, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21.प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य - विमलेश कांति वर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ
22. उर्दू साहित्य का इतिहास - सैय्यदएहतेशाम हुसैन, लोकभारती प्रकाशन

तृतीय सत्र

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

CDOE-HIN-101-CW-61020

हिन्दी आलोचना एवं आलोचक

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य– Learning Outcomes (LOs)

LO 1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी आलोचना के विकास एवं मुख्य आलोचना दृष्टियों से अवगत हो सकेंगे तथा हिन्दी आलोचना के आरंभिक स्वरूप और विकास की विभिन्न दृष्टियों का अध्ययन कर सकेंगे।

LO2.विद्यार्थी हिन्दी गद्य के प्रमुख हिन्दी आलोचक रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी तथाडॉ. नगेन्द्र कीआलोचना-दृष्टि से अवगत हो सकेंगे।

LO 3.विद्यार्थी हिन्दी गद्य के प्रमुख हिन्दी आलोचकरामविलास शर्मा, नामवर सिंह तथा मैनेजर पाण्डेय कीआलोचना-दृष्टि से अवगत हो सकेंगे।

LO 4. विद्यार्थी हिन्दी गद्य के प्रमुख हिन्दी आलोचकसच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय, गजानन माधव 'मुक्तिबोध' तथा कँवल भारती की आलोचना-दृष्टि से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियाँ: Course Outcomes (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी आलोचना केविकास एवं मुख्य आलोचना दृष्टियों से अवगतहुएतथा हिन्दी आलोचना के आरंभिक स्वरूप और विकास की विभिन्न दृष्टियों का अध्ययन किया।

CO2.विद्यार्थी हिन्दी गद्य के प्रमुख हिन्दी आलोचक रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी तथाडॉ. नगेन्द्र कीआलोचना-दृष्टि से अवगत हुए।

CO3.विद्यार्थी हिन्दी गद्य के प्रमुख हिन्दी आलोचकरामविलास शर्मा, नामवर सिंह तथा मैनेजर पाण्डेय कीआलोचना-दृष्टि से अवगत हुए।

CO4.विद्यार्थियों ने हिन्दी गद्य के प्रमुख हिन्दी आलोचकसच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय', गजानन माधव 'मुक्तिबोध' तथा कँवल भारती की आलोचना-दृष्टि से सम्बंधित ज्ञान प्राप्त किया।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	हिन्दी आलोचना का विकास एवं मुख्य आलोचना दृष्टियाँ : हिन्दी आलोचना का आरंभिक स्वरूप; हिन्दी आलोचना का विकास; हिन्दीआलोचना की प्रमुख दृष्टियाँ- शास्त्रीय, ऐतिहासिक, मार्क्सवादी, समाजशास्त्रीय,मनोविश्लेषणवादी, रूपवादी, दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श, जनजातीय विमर्श।	30	C1
2	1. रामचन्द्र शुक्ल 2. हजारीप्रसाद द्विवेदी 3. डॉ. नगेन्द्र	30	C2
3	1. रामविलास शर्मा 2. नामवर सिंह 3. मैनेजर पाण्डेय	30	C3
4	1. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' 2. गजानन माधव 'मुक्तिबोध' 3. कँवल भारती	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	2	3	3	3	2	3	2	2
CO2	3	3	3	3	3	3	2	2	3
CO3	3	3	3	3	3	3	2	2	3
CO4	3	3	3	3	3	3	2	2	3
Average	3	2.75	3	3	3	2.75	2.25	2	2.75

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश :

1. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15×4= 60
2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5×4=20

सहायक ग्रंथ:

1. कविता के नए प्रतिमान - डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. आलोचक और आलोचना - बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. हिन्दी आलोचना का विकास – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी आलोचना: शिखरों का साक्षात्कार – डॉ. रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य – डॉ. चौथीराम यादव, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी।
6. तीसरा रुख – पुरुषोत्तम अग्रवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. नई कविता और अस्तित्ववाद – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
9. दलित विमर्श की भूमिका – कंवल भारती, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. स्त्री उपेक्षिता – सीमोन द बोउवार, अनु.- प्रभा खेतान, हिन्द पाकेट बुक्स
11. हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
12. इतिहास और आलोचना – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
13. दूसरी परंपरा की खोज – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
14. हिन्दी आलोचना का विकास – मधुरेश, लोकभारती प्रका. दिल्ली।
15. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
16. हिंदी के प्रहरी – रामविलास शर्मा, सं. विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन
17. आलोचना की सामाजिकता – मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिलली।
18. शिवदान सिंह चौहान का आलोचना-कर्म – अमरेन्द्र त्रिपाठी, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली।
19. आलोचना और आलोचना – देवी शंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
20. वादविवादसंवाद - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
21. अज्ञेय - रमेश चन्द्र शाह, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
22. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - रामचन्द्र तिवारी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
23. डॉ. नगेन्द्र - निर्मला जैन, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
24. मुक्तिबोध - नंदकिशोर नवल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
25. रामस्वरूप चतुर्वेदी - हनुमान प्रसाद शुक्ल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
26. शिवदान सिंह चौहान - पुरुषोत्तम अग्रवाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
27. दलित आन्दोलन का इतिहास - मोहनदास नैमिषराय
28. संत रैदास: एक विश्लेषण - कँवल भारती
29. दूसरी परम्परा का शुक्ल पक्ष - कमलेश वर्मा, सुचिता वर्मा
30. मैनेजेर पाण्डेय: आलोचना का आलोक - अरुण देव

अधिगम अवधि: 120
क्रेडिट: 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

तृतीय सत्र

CDOE-HIN-101-CW - 61030

भारतीय साहित्य

पूर्णांक :100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य- Learning Outcomes (LOs)

LO 1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय साहित्य की अवधारणा, स्वरूप तथाबहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिकता से उसके अन्तःसम्बन्ध से अवगत हो सकेंगे।

LO 2. विद्यार्थी भारतीय साहित्य के अंतर्गतउत्तर पूर्व के लेखक येशे दोरजी थोंङ्ची द्वारालिखित उपन्यास 'मौन होंठ मुखर हृदय' का अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा कर सकेंगे।

LO 3. विद्यार्थी भारतीय साहित्य के अंतर्गत गिरीशकर्नाडद्वारालिखितनाटक'तुगलक' का अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा कर सकेंगे।

LO 4. विद्यार्थी भारतीय साहित्य के अंतर्गतसीताकांत महापात्र, लेनचेनबा मीतै, निर्मला पुतुल तथानजरुल इस्लाम की चयनित कविताओंका अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियाँ- Course Outcomes (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय साहित्य की अवधारणा, स्वरूप तथाबहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिकता से उसके अन्तःसम्बन्ध से अवगत हुए।

CO2.विद्यार्थियों ने भारतीय साहित्य के अंतर्गतउत्तर पूर्व के लेखक येशे दोरजी थोंङ्ची द्वारालिखित उपन्यास 'मौन होंठ मुखर हृदय' का अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा की।

CO3.विद्यार्थी भारतीय साहित्य के अंतर्गत गिरीशकर्नाडद्वारालिखितनाटक'तुगलक' का अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा कर सके।

CO4.विद्यार्थियों ने भारतीय साहित्य के अंतर्गतसीताकांत महापात्र, लेनचेनबा मीतै, निर्मला पुतुल तथानजरुल इस्लाम की चयनित कविताओंका अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा की।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	सांस्कृतिक इकाई के रूप में भारत; भारतीय साहित्य की अवधारणा; भारतीय साहित्य का स्वरूप; बहुभाषिकता और भारतीय साहित्य; बहुसांस्कृतिकता और भारतीय साहित्य	30	C1
2	उपन्यास : पाठ्य पुस्तक – मौन होंठ मुखर हृदय, लेखक – येशे दोरजी थोंङ्ची अनुवादक – दिनकर कुमार ; वाणी प्रकाशन, दिल्ली	30	C2
3	नाटक : पाठ्य पुस्तक – तुगलक ; लेखक – गिरीश कर्नाड	30	C3
4	कविता : पाठ्य पुस्तक – आधुनिक भारतीय कविता; सम्पादक - अवधेश नारायण मिश्र, नन्दकिशोर पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी पाठ्य कविताएँ क. ओड़िया – सीताकांत महापात्र, पाठ्य कविता : धान कटाई ख. मणिपुरी - लेनचेनबा मीतै, पाठ्य कविता : तुझे नहीं खेया नाव ग. सन्थाल – निर्मला पुतुल, पाठ्य कविता : बिटिया मुर्मू के लिए तीन कविताएँ घ. बांग्ला - नजरुल इस्लाम, पाठ्य कविता : साम्यवाद, हे! पार्थ सारथी	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	3	3	3	1	1	1
CO2	3	2	3	2	3	3	2	1	2
CO3	3	2	3	2	3	3	2	1	2
CO4	3	2	3	2	3	3	2	1	2
Average	3	2.25	2.75	2.25	3	3	1.75	1	1.75

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश :

1. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 14×4= 56
2. इकाई 2,3 तथा 4 से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×3= 24

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय साहित्य : स्थापनाएं और प्रस्थापनाएं - के. सच्चिदानन्द, राजकमल, दिल्ली।
2. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएं – रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. भारतीय साहित्य - डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. भारतीय साहित्य – डॉ. मूलचन्द गौतम(सम्पादक), राधाकृष्ण, दिल्ली।
5. भारतीयता की पहचान – केशवचन्द्र वर्मा, लोकभारती, दिल्ली।
6. भारतीय और विश्व कविता - क. र. श्रीनिवास अयंगार।
7. भारतीय साहित्य : आशा और आस्था - डॉ. आरसु, राजकमल, दिल्ली।
8. भारतीय साहित्य की भूमिका – रामविलास शर्मा, राजकमल ।
9. भारतीय महाकाव्य - डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
10. History of Indian Literature (2 Vol.) – शिशिर कुमार दास, साहित्य अकादमी, दिल्ली ।
11. Indian Culture and Heritage (Vol. 3) – Ramkrishna Mission, Kolkata
12. दो रंग पुरुष – डॉ. जमुना बीनी तादर, रीडिंग रूम्स, दिल्ली
13. अमृता प्रीतम - सुतिन्दर सिंह नूर, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
14. काजी नज़रूल इस्लाम - गोपाल हाल्दार, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
15. रवीन्द्रनाथ ठाकुर - शिशिर कुमार घोष, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
16. वेमना - ए. रमेश चौधरी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

अधिगम अवधि: 120
क्रेडिट: 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

तृतीय सत्र

CDOE-HIN-101-CW-61040

निर्गुण भक्ति-काव्य

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य- Learning Outcomes (LOs)

LO 1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधारा की परंपरा तथा उसकी विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे। विद्यार्थी कबीरदास के चयनित पदोंका अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा कर सकेंगे। विद्यार्थी कबीर की सामाजिक चेतना, दार्शनिक विचार तथा भक्ति भावना से भी अवगत हो सकेंगे।

LO 2. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधाराके कवि रैदास के चयनित पदोंका अध्ययन, व्याख्याऔर उनके साहित्य के विविध पक्षों यथा- समाज-दर्शन, समतामूलक भावना तथाबेगमपुरा की अवधारणा का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

LO 3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधाराके कवि दादूदयाल के चयनितपदों का अध्ययन, व्याख्याऔरउनके साहित्य के महत्त्वपूर्ण पक्षों यथा- विशाल शिष्य परम्परा, दार्शनिक विचार एवंसाम्प्रदायिक सौहार्द की चेतना का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

LO 4. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधाराके कवि रज्जब के चयनित पदोंका अध्ययन, व्याख्याऔर उनके साहित्य के विविध पक्षों यथा- ग्रंथन कला, सामाजिक समरसता की भावना तथा भक्ति भावना का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

उपलब्धियाँ: Course Outcomes (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधारा की परंपरा तथा उसकी विशेषताओं का अध्ययन किया। विद्यार्थी कबीरदास के चयनित पदोंकाअध्ययन,व्याख्याऔरसमीक्षा कर सके। विद्यार्थी कबीर की सामाजिक चेतना, दार्शनिक विचार तथा भक्ति भावना से भी अवगत हुए।

CO2.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधाराके कवि रैदास के चयनित पदोंकाअध्ययन,व्याख्याऔर उनके साहित्य के विविध पक्षों यथा- समाज-दर्शन, समतामूलक भावना तथाबेगमपुरा की अवधारणा का आलोचनात्मक अध्ययन किया।

CO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधाराके कवि दादूदयाल के चयनितपदों का अध्ययन, व्याख्या औरउनके साहित्य के महत्त्वपूर्ण पक्षों यथा- विशाल शिष्य परम्परा, दार्शनिक विचार एवंसाम्प्रदायिक सौहार्द की चेतना का आलोचनात्मक अध्ययन किया।

CO4.इस पत्र के माध्यमसे विद्यार्थियों ने हिन्दी साहित्य की निर्गुण काव्यधाराके कवि रज्जब के चयनित पदोंकाअध्ययन,व्याख्याऔर उनके साहित्य के विविध पक्षों यथा- ग्रंथन कला, सामाजिक समरसता की भावना तथा भक्ति भावना का आलोचनात्मक अध्ययन किया।

पाठ्य पुस्तक : संत काव्य – संपादक - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद

इकाई	**विषय**	**संवाद-अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	कबीर- प्रारंभ से 25 पद	30	C1
2	रैदास-प्रारंभ से 14 पद	30	C2
3	दाददयाल- प्रारंभ के 7 पद एवं 30 साखी	30	C3
4	रज्जब- प्रारंभ से 5 पद एवं 30 साखी	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	1	3	3	2	1	3
CO2	3	3	2	1	3	3	2	1	3
CO3	3	3	2	1	3	3	2	1	3
CO4	3	3	3	1	3	3	2	1	3
Average	3	3	2.25	1	3	3	2	1	3

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्यापूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32

2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे,जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4= 48

सहायक ग्रंथ :

1. नाथ सम्प्रदाय - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य में निर्गुण सम्प्रदाय – डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल।
3. उत्तर भारत की संत परंपरा – परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, प्रयाग।

4. मध्ययुगीन निर्गुण चेतना – डॉ. धर्मपाल मैनी, लोकभारती, इलाहाबाद।
5. संतों के धार्मिक विश्वास - डॉ. धर्मपाल मैनी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. रैदास वाणी – डॉ. शुकदेव सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. कबीर - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन।
8. दादू पंथ : साहित्य और समाज दर्शन - डॉ. ओकेन लेगो, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
9. दादू दयाल – परशुराम चतुर्वेदी
10. संत साहित्य की समझ - नन्द किशोर पाण्डेय, यश पब्लिकेशन, दिल्ली।
11. सन्त रज्जब - नन्द किशोर पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
12. रज्जब - नन्द किशोर पाण्डेय, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
13. जयदेव - आनन्द कुशवाहा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
14. जायसी - परमानन्द श्रीवास्तव, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
15. तुकाराम - भालचन्द्र नेमाडे, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

तृतीय सत्र

CDOE-HIN-101-CW-61050

अधिगम अवधि: 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

प्रयोजनमूलक हिन्दी

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objective (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीप्रयोजनमूलक हिन्दी कीपरिभाषा और स्वरूप, हिन्दी भाषा के विविध रूपों और राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति और राजभाषा कार्यान्वियन के विभिन्न प्रावधानों से अवगत हो सकेंगे।

LO2.विद्यार्थीकार्यालयी हिन्दी केस्वरूप एवं प्रयुक्तियाँ तथाकार्यालयी पत्राचार के विविध रूपों का अध्ययन कर सकेंगे।

LO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुवाद केअर्थ एवं अभिप्राय तथा उसके प्रकारों का अध्ययन कर सकेंगे, साथ ही अनुवाद की चुनौतियां एवं संभावनाओं से अवगत हो सकेंगे।

LO4.विद्यार्थीमीडिया लेखन केअर्थ एवं स्वरूप तथा उसकी विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे एवं माध्यमोपयोगी लेखन से भी अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीप्रयोजनमूलक हिन्दी कीपरिभाषा और स्वरूप, हिन्दी भाषा के विविध रूपों और राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति और राजभाषा कार्यान्वियन के विभिन्न प्रावधानों से अवगत हुए।

CO2.विद्यार्थीकार्यालयी हिन्दी केस्वरूप एवं प्रयुक्तियाँ तथाकार्यालयी पत्राचार के विविध रूपों का अध्ययन कर सके।

CO3. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी अनुवाद केअर्थ एवं अभिप्राय तथा उसके प्रकारों का अध्ययन किया, साथ ही अनुवाद की चुनौतियोंएवं संभावनाओं से अवगत हुए।

CO4.विद्यार्थीमीडिया लेखन केअर्थ एवं स्वरूप तथा उसकी विशेषताओं से अवगत हुए एवं माध्यमोपयोगी लेखन से भी परिचित हो सके।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	**प्रयोजनमूलक हिन्दी:** प्रयोजनमूलक हिन्दी: परिभाषा और स्वरूप, हिन्दी भाषा के विविध रूप-राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी।भारतीय संविधान में राजभाषा हिन्दी की स्थिति :अनुच्छेद 343 से 351 तक, अनुच्छेद 120 और 210, राजभाषा कार्यान्वयन: राष्ट्रपति के आदेश सन् 1952, 1955 एवं 1960, राजभाषा अधिनियम– 1963 यथा संशोधित- 1967, राजभाषा नियम-1976यथासंशोधित 1987।	30	C1
2	**कार्यालयी हिन्दी :** कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप एवं प्रयुक्तियाँ, कार्यालयी पत्राचार के विविध रूप: प्रारूपण, टिप्पण, परिपत्र, ज्ञापन, प्रतिवेदन, अनुस्मारक, अधिसूचना, पृष्ठांकन।	30	C2
3	**अनुवाद प्रविधि:** अनुवाद : अर्थ एवं अभिप्राय; अनुवाद के प्रकार-अन्त:भाषिक अनुवाद; अन्तर-अनुशासनिक अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद, जन-संचार सम्बन्धी सामग्री का अनुवाद, कार्यालयीन सामग्री का अनुवाद, मशीनी अनुवाद;अनुवाद एवं आशु अनुवाद में अन्तर; आशु अनुवाद के क्षेत्र; अनुवाद की चुनौतियां एवं संभावनाएं।	30	C3
4	**मीडिया लेखन:** मीडिया लेखन : अर्थ एवं स्वरूप, मीडिया लेखन की विशेषताएँ, माध्यमोपयोगी लेखन: समाचार लेखन, रेडियो-लेखन, फीचर-लेखन, पटकथा-लेखन, विज्ञापन-लेखन।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	1	1	-	3	1	1	-	3	1
CO2	2	1	1	3	1	1	-	3	2
CO3	2	3	-	3	2	2	1	3	2
CO4	1	2	1	3	1	2	1	3	2
Average	1.50	1.75	0.50	3	1.25	1.50	0.50	3	1.75

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से दीर्घ उत्तरीयपूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15×4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5×4= 20

सहायक ग्रंथ:

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
3. आधुनिक पत्रकारिता - अर्जुन तिवारी, विश्वविधालय प्रकाशन, वाराणसी
4. अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली
5. कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ - भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली
6. कार्यालयी अनुवाद की निर्देशिका - गोपीनाथ श्रीवास्तव, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
7. अनुवाद कला - डॉ.विश्वनाथ अय्यर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
8. अनुवादः सिद्धांत और प्रयोग - डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
9. हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली
10. संवाददाता, सत्ता और महता - हेरम्ब मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद
11. सम्पादन के सिद्धांत - रामचन्द्र तिवारी, आलेख प्रकाशन , दिल्ली
12. प्रेस विधि - नन्दकिशोर त्रिखा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास - सं. डॉ. नगेन्द्र
14. टेलीविजनः सिद्धान्त और टेकनीक - मथुरादत शर्मा
15. रेडियो लेखन - मधुकर गंगाधर

चतुर्थ सत्र

चतुर्थ सत्र

CDOE-HIN-101-CW-62010

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

समकालीन हिन्दी काव्य

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर: 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objectives (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीनागार्जुन और अज्ञेय की चयनित कविताओं का अध्ययन, व्याख्या एवंसमीक्षा कर सकेंगे।

LO2.विद्यार्थी मुक्तिबोध और धर्मवीर भारती की चयनित कविताओं के अध्ययन, व्याख्या एवं समीक्षा सेअवगत हो सकेंगे।

LO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भवानीप्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय और 'धूमिल' की चयनित कविताओं का अध्ययन, व्याख्या एवंसमीक्षा कर सकेंगे।

LO4.विद्यार्थी वीरेन डंगवाल, अरुण कमल और अनामिका की चयनित कविताओं का अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीनागार्जुन और अज्ञेय की चयनित कविताओं का अध्ययन, व्याख्या एवंसमीक्षा कर सके।

CO2.विद्यार्थी मुक्तिबोध और धर्मवीर भारती की चयनित कविताओं का अध्ययन, व्याख्या एवं समीक्षा कर सके।

CO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भवानीप्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय और 'धूमिल' की चयनित कविताओं का अध्ययन, व्याख्या एवंसमीक्षा कर सके।

CO4.विद्यार्थी वीरेन डंगवाल, अरुण कमल और अनामिका की चयनित कविताओं का अध्ययन, व्याख्या और समीक्षा कर सके।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	क. नागार्जुन- कालिदास, बादल को घिरते देखा है, शासन की बन्दूक ख. अज्ञेय– असाध्यवीणा	30	C1
2	क. मुक्तिबोध – अंधेरे में (पाठांश-1, 4 तथा 8) ख. धर्मवीर भारती- अन्धा युग; पाठांश– समापन (प्रभु की मृत्यु)	30	C2
3	क. भवानी प्रसाद मिश्र- गीत फरोश, सतपुड़ा के जंगल ख. रघुवीर सहाय – स्वाधीन व्यक्ति, पढ़िए गीता ग. धूमिल- अकाल-दर्शन, रोटी और संसद	30	C3
4	क. वीरेन डंगवाल – हमारा समाज; उजले दिन ख. अरुण कमल – धार; हमारे युग का नायक ग. अनामिका-चिट्ठी लिखती हुई औरत;स्त्रियाँ	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	1	3	3	2	-	2
CO2	3	3	2	1	3	3	2	-	2
CO3	3	3	2	1	3	3	2	-	2
CO4	3	3	2	1	3	3	2	-	2
Average	3	3	2	1	3	3	2	-	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे।8×4=32

2. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4= 48

सहायक ग्रंथः

1. मुक्तिबोधः ज्ञान और संवेदना -नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
2. अज्ञेय की काव्य-तितीर्षा -नन्दकिशोर आचार्य, वाणी प्रकाशन दिल्ली।
3. अज्ञेय की कविताः मूल्यांकन -चन्द्रकांत बाण्डिवडेकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. मुक्तिबोध की काव्य-प्रक्रिया -अशोक चक्रधर, भारतीय ग्रंथ निकेतन, दिल्ली।
5. कविता के नये प्रतिमान -नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. समकालीन हिन्दी कविता -डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या –रामस्वरूप चतुर्वेदी
8. सदी के अन्त में कविता -सं. डॉ. विजयकुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
9. समकालीन कविता का यथार्थ -डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
10. नयी कविताः स्वरूप और संवेदना –डॉ. जगदीश गुप्त।
11. नयी कविता और अस्तित्ववाद -रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली।
12. शब्द और मनुष्य -परमानन्द श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
13. कवि कह गया है -अशोक वाजपेयी
14. समकालीन कविता के बारे में -नरेन्द्र मोहन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
15. रचना और आलोचना -देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
16. रघुवीर सहाय का कवि कर्म -सुरेश शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
17. कवियों की पृथ्वी -अरविंद त्रिपाठी
18. एक कवि की नोटबुक -राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
19. हिन्दी नवगीत का संक्षिप्त इतिहास –डॉ. अवधेशनारायण मिश्र, आर्यभाषा संस्थान, वाराणसी
20. कवियों की पृथ्वी -अरविवन्द्र त्रिपाठी, आधार प्रकाशन, पंचकूला
21. समकालीन कविता के आयाम -पी. रवि, लोकभारती, इलाहाबाद
22. काव्यभाषा और नागार्जुन की कविता -कमलेश वर्मा, पेरियार प्रकाशन, पटना
23. रघुवीर सहाय - पंकज चतुर्वेदी, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
24. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - कृष्ण दत्त पालीवाल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
25. सुदामा पाण्डेय धूमिल - अवधेश प्रधान, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
26. शमशेर बहादुर सिंह - प्रभाकर श्रोत्रिय , साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

चतुर्थ सत्र

CDOE-HIN-101-CW-62020

अधिगम अवधि: 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

हिन्दी उपन्यास एवं आत्मकथा

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objectives (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी'परीक्षा गुरु' उपन्यासके मुख्य अंशों की व्याख्या कर सकेंगे एवं औपन्यासिक तत्वों के आधार पर उपन्यास की समीक्षा कर सकेंगे।

LO2.विद्यार्थी 'गोदान' उपन्यासके मुख्य अंशों की व्याख्या कर सकेंगे एवं उपन्यास में व्यंजित किसान समस्या, उपनिवेशवाद की समस्या तथा गोदानकेमहाकाव्यत्व से अवगत हो सकेंगे।

LO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यासके मुख्य अंशों की व्याख्या कर सकेंगे तथा उपन्यास में निहित नारी चेतना, राष्ट्र चेतना तथा शिल्पगतवैशिष्ट्यसेपरिचित हो सकेंगे।

LO4.विद्यार्थीमन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' के मुख्य अंशों की व्याख्या कर सकेंगे तथा आत्मकथा के तत्वों के आधार पर समीक्षा कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी'परीक्षा गुरु' उपन्यासके मुख्य अंशों की व्याख्या कर सके एवं औपन्यासिक तत्वों के आधार पर उपन्यास की समीक्षा की।

CO2.विद्यार्थियों ने 'गोदान' उपन्यासके मुख्य अंशों की व्याख्या की एवं उपन्यास में व्यंजित किसान समस्या, उपनिवेशवाद की समस्या तथा गोदानकेमहाकाव्यत्व से अवगत हुए।

CO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यासके मुख्य अंशों की व्याख्या कीतथा उपन्यास में निहित नारी चेतना, राष्ट्र चेतना तथा शिल्पगतवैशिष्ट्यसे परिचित हुए।

CO4.इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों ने मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' के मुख्य अंशों की व्याख्या कीतथा आत्मकथा के तत्वों के आधार पर उसकी समीक्षा की।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	परीक्षा-गुरु : लाला श्रीनिवास दास	30	C1
2	गोदान : प्रेमचन्द	30	C2
3	बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी	30	C3
4	एक कहानी यह भी : मन्नू भण्डारी	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	3	3	2	2	3	3	2	1	1
CO2	3	3	2	2	3	3	2	1	1
CO3	3	3	2	2	3	3	2	1	1
CO4	3	3	2	2	3	3	2	1	1
Average	3	3	2	2	3	3	2	1	1

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से व्याख्या पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 8×4=32

2. प्रत्येक इकाई सेआलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 12×4=48

सहायक ग्रंथ:

1. हिन्दी उपन्यास - सं. नित्यानंद तिवारी
2. हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा - रामदरश मिश्र, राजकमल , दिल्ली।
3. उपन्यास का उदय - इयान वॉट
4. उपन्यास के पहलू - ई. एम. फोस्टर
5. उपन्यास और लोक जीवन - रॉल्फ फॉक्स
6. कथा विवेचना और गद्य शिल्प - रामविलास शर्मा
7. दूसरी परम्परा की खोज - नामवर सिंह, राजकमल, दिल्ली।
8. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास - इन्द्रनाथ
9. कलम का सिपाही - अमृत राय
10. हिन्दी उपन्यास का इतिहास - गोपाल राय, राजकमल, दिल्ली।
11. कलम का मजदूर - मदन गोपाल

12. प्रेमचन्द और उनका युग - रामविलास शर्मा
13. आत्मकथा की संस्कृति - पंकज चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
14. बाणभट्ट की आत्मकथाः पाठ और पुनर्पाठ – सं. मधुरेश , आधार प्रकाशन प्र. लि. पंचकूला।
15. प्रेमचन्द विश्वकोश (5 खंड) – डॉ. कमल किशोर गोयनका
16. हिन्दी के महिला उपन्यासकार – प्रो. एम. वेंकटेश्वर, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
17. हिन्दी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन – प्रो. एम. वेंकटेश्वर, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
18. ग्रामीण-परिवर्तन और भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यास - मोती लाल, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद

चतुर्थ सत्र

CDOE-HIN-101-CW-63030

अरुणाचली लोक साहित्य

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे
स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक :100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objectives (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीलोक के अर्थ एवं अवधारणा, लोक साहित्य के स्वरूप एवं भेद, साहित्य एवं लोक साहित्य के अन्तःसम्बन्ध,लोक संस्कृति के तत्त्व एवं लोक साहित्य के विभिन्न प्रकारों से परिचित हो सकेंगे,साथ ही लोक साहित्य की सीमाओंएवं सम्भावनाओं से भी अवगत हो सकेंगे।

LO2.विद्यार्थी अरुणाचल प्रदेश कीभौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक परिचय तथाअरुणाचल प्रदेशकी जनजातियों का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे, साथही अरुणाचलप्रदेशकी विभिन्न बोलियोंएवं उनमें उपलब्ध लोक साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

LO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीअरुणाचली लोकगीतों के सामान्य परिचय, उनकेवर्गीकरण तथावैशिष्ट्य का अध्ययन कर सकेंगे, साथ हीअरुणाचल प्रदेश की लोक कथा, उसकेविविध रूपोंतथा विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

LO4.विद्यार्थीअरुणाचल प्रदेश केलोक नाट्य, उसके विविध रूपों एवं विशेषताओंसे परिचित हो सकेंगे, साथ ही विद्यार्थी अरुणाचलप्रदेशके लोक-सुभाषितों, मुहावरों, कहावतों, पहेलियों का अध्ययन कर सकेंगे। विद्यार्थी अरुणाचल प्रदेशकेलोक साहित्य के संग्रह की आवश्यकता एवं इस कार्य में आने वाली कठिनाइयों, उपलब्धियोंतथा सम्भावनाओं से अवगत हो सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीलोक के अर्थ एवं अवधारणा, लोक साहित्य के स्वरूप एवं भेद, साहित्य एवं लोक साहित्य केअन्तःसम्बन्ध,लोक संस्कृति के तत्त्व एवं लोक साहित्य के विभिन्न प्रकारों से परिचितहुए,साथ ही लोक साहित्य की सीमाओंएवं सम्भावनाओं से भी अवगत हुए।

CO2.विद्यार्थियों ने अरुणाचल प्रदेश कीभौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक परिचय तथाअरुणाचल प्रदेशकी जनजातियों का सामान्य परिचय प्राप्तकिया, साथ ही अरुणाचल प्रदेशकी विभिन्न बोलियोंएवं उनमें उपलब्ध लोक साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त किया।

CO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीअरुणाचली लोकगीतों के सामान्य परिचय, उनकेवर्गीकरण तथावैशिष्ट्य का अध्ययन कर सके, साथ हीअरुणाचल प्रदेश की लोक कथा, उसकेविविध रूपोंतथा विशेषताओं से परिचित हुए।

CO4.विद्यार्थीअरुणाचल प्रदेश केलोक नाट्य, उसके विविध रूपों एवं विशेषताओंसे परिचित हुए, साथ ही विद्यार्थियों ने अरुणाचल प्रदेशके लोक-सुभाषितों, मुहावरों, कहावतों, पहेलियों का अध्ययन किया। विद्यार्थी अरुणाचल प्रदेशकेलोक साहित्य के संग्रह की आवश्यकता एवं इस कार्य में आने वाली कठिनाइयों, उपलब्धियोंतथा सम्भावनाओं से अवगत हुए।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	लोक : अर्थ एवं अवधारणा, लोक साहित्य : स्वरूप एवं भेद, साहित्य एवं लोक साहित्य, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, लोक साहित्य के विविध अंगों-लोकगीत, लोककथा, लोक गाथा, लोकनाट्य तथा लोक सुभाषित का परिचय, लोक साहित्य का महत्त्व तथा लोक साहित्य की सीमाएँ एवं सम्भावनाएँ।	30	C1
2	अरुणाचल प्रदेश : भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक परिचय, अरुणाचल की जनजातियों का सामान्य परिचय, अरुणाचल की बोलियाँ एवं उनमें उपलब्ध लोक साहित्य का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण।	30	C2
3	अरुणाचली लोकगीत : सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण, अरुणाचली लोकगीतों का सोदाहरण वैशिष्ट्य,अरुणाचली लोक कथा: अरुणाचल की लोककथाओं के विविध रूप और उनके उदाहरण, अरुणाचली लोककथाओं की विशेषताएँ।	30	C3
4	अरुणाचली लोक नाट्य: विविध रूप और विशेषताएँ, अरुणाचली लोक-सुभाषित: मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ आदि। अरुणाचली लोक साहित्य के संग्रह की आवश्यकता एवं इस कार्य में आने वाली कठिनाइयाँ, अरुणाचल के लोक साहित्यका संग्रह : उपलब्धियाँ एवं सम्भावनाएँ।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	2	2	1	3	2	1	1	1	2
CO2	2	2	1	3	2	1	1	1	1
CO3	3	1	1	3	2	2	2	1	2
CO4	3	1	1	3	2	2	2	1	2
Average	2.50	1.50	1	3	2	1.50	1.50	1	1.75

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. प्रत्येक इकाई से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15×4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जाएगी, जिसके विकल्प भी होंगे।   5×4= 20

सहायक ग्रंथ:

1. लोक साहित्य विज्ञान - सं. सत्येन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
3. लोक साहित्य विमर्श - डॉ. श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी
4. लोक साहित्य और संस्कृति - डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (16 वां भाग) – नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
6. अरुणाचल के त्योहार - डॉ. धर्मराज सिंह
7. अरुणाचल की आदी जनजाति का सामाजिक अध्ययन – डॉ. धर्मराज सिंह
8. मनोरम भूमि अरुणाचल - माता प्रसाद
9. अरुणप्रभा - अरुणाचल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की शोध पत्रिका,प्रवेशांक- 2001 तथा संयुक्तांक 2002-2003 (अरुणाचल विशेषांक)
10. कस्टमरी लॉज ऑफ न्यीशी - नाबम नाका हिना, आर्ट्स प्रेस, दिल्ली
11. आदी जनजाति : साहित्य एवं समाज - डॉ. ओकेन लेगो, यश पब्लिकेशन, दिल्ली
12. न्यीशी लोक गीत : सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. जोरम आन्या ताना, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली
13. न्यीशी जनजाति का समाजभाषिक अध्ययन – डॉ. जोरम यालम, विजय भारती प्रकाशन, असम
14. राष्ट्रीय स्मृति, संस्कृति और भाषा - डॉ. हरीश कुमार शर्मा, साहित्य भंडार, इलाहाबाद
15. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक-संस्कृति - डॉ. हरीशकुमार शर्मा, जास्मिन पब्लिकेशन, दिल्ली

चतुर्थ सत्र

CDOE-HIN-101-CW-62040

तुलनात्मक भारतीय साहित्य

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100
अभ्यन्तर : 20
सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objectives (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीतुलनात्मक अध्ययन कीअवधारणा एवं स्वरूप, इतिहास एवं परम्परा से अवगत हो सकेंगे, साथ ही हिन्दी में तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा और उसकेविकास से परिचित हो सकेंगे।
LO2.विद्यार्थी प्रेमचन्द के उपन्यास'गोदान' के साथ फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास'छह बीघा जमीन'का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

LO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीमोहन राकेश के नाटक'आधे-अधूरे' एवं गिरीश कर्नाड के नाटक'हयवदन' का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

LO4.विद्यार्थीलोकगीत तथा लोककथाओंके विशेष संदर्भ मेंअरुणाचल प्रदेशतथाहिन्दी क्षेत्रके लोक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीतुलनात्मक अध्ययन कीअवधारणा एवं स्वरूप, इतिहास एवं परम्परा से अवगत हुए, साथ ही हिन्दी में तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा और उसकेविकास से परिचित हुए।

CO2.विद्यार्थियों ने प्रेमचन्द के उपन्यास'गोदान' के साथ फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास'छह बीघा जमीन'का तुलनात्मक अध्ययन किया।

CO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने मोहन राकेश के नाटक'आधे-अधूरे' एवं गिरीश कर्नाड के नाटक'हयवदन' का तुलनात्मक अध्ययन किया।

CO4.विद्यार्थियों ने लोकगीत तथा लोककथाओंके विशेष संदर्भ मेंअरुणाचल प्रदेशतथाहिन्दी क्षेत्रके लोक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया।

इकाई	विषय	संवाद-अवधि (घंटों में)	उपलब्धियाँ(Course Outcome)
1	तुलनात्मक अध्ययन : अवधारणा एवं स्वरूप; तुलनात्मक अध्ययन का इतिहास; भारत में तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा; हिन्दी में तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा और उसका विकास।	30	C1
2	प्रेमचन्द के उपन्यास‘गोदान’ के साथ फकीर मोहन सेनापति के उपन्यास‘छह बीघा जमीन’ का तुलनात्मक अध्ययन।	30	C2
3	मोहन राकेश के नाटक‘आधे-अधूरे’ एवं गिरीश कर्नाड के नाटक‘हयवदन’ का तुलनात्मक अध्ययन।	30	C3
4	अरुणाचल प्रदेशके लोक साहित्य का हिन्दी क्षेत्रकेलोक साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन- लोकगीत तथा लोककथा के विशेष संदर्भ में।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	1	2	3	1	2	2	1	1	2
CO2	3	3	2	2	3	3	3	1	2
CO3	3	3	2	2	3	3	3	1	2
CO4	1	1	1	3	2	1	2	-	2
Average	2	2.25	2	2	2.50	2.25	2.25	0.75	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देश:

1. प्रत्येक इकाई से दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15×4= 60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5×4= 20

सहायक ग्रंथ :

1. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका - इन्द्रनाथ चौधुरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य – इन्द्रनाथ चौधुरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. तुलनात्मक साहित्य - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ – के. सच्चिदानन्द, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. भारतीय साहित्य - डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
7. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएं – सं. डॉ. म. ह, राजूरकर, डॉ. राजकमल बोरा-वाणी प्रकाशन, दिल्ली

8. भारतीय साहित्य की भूमिका – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकल प्रकाशन
9. तुलनात्मक साहित्य – हनुमान प्रसाद शर्मा,
10. भारतीय भाषा परिवार और हिन्दी - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन

चतुर्थ सत्र

CDOE-HIN-101-CW-62050

हिन्दी सिनेमा और साहित्य

अधिगम अवधि : 120
क्रेडिट : 4
व्याख्यान अवधि: 40 घंटे

स्वाध्याय अवधि : 80 घंटे

पूर्णांक : 100

अभ्यन्तर : 20

सत्रांत : 80

उद्देश्य : Learning Objectives (LOs)

LO1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीहिन्दी सिनेमा के उद्भव और विकास तथाउसकेविविध आयाम, कला फिल्मों एवं व्यावसायिक फिल्मों में अन्तर, सिनेमा और साहित्य में अन्तर तथा पारस्परिक सम्बन्ध, हिन्दी सिनेमा के विकास में हिन्दी के साहित्यकारों के योगदान तथा हिन्दी सिनेमा और हिन्दी साहित्य के अन्तःसम्बन्धोंसे परिचित हो सकेंगे।
LO2.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी की साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम', 'शतरंज के खिलाड़ी' और'रजनीगन्धा' कासमीक्षात्मक अध्ययन कर सकेंगे।
LO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीहिन्दी साहित्य और फ़िल्मी गीतों के सम्बन्ध तथा उनके साहित्यिक महत्व से परिचित हो सकेंगे, साथ ही हिन्दी के साहित्यिक गीतों का हिन्दी फ़िल्मों पर प्रभाव तथा हिन्दी फ़िल्मी गीतों कीलोकप्रियता काअध्ययन कर सकेंगे।

LO4.विद्यार्थीहिंदी कथा एवं पटकथा के स्वरूप और लेखन-कला, कथा के पटकथा में रूपान्तरण की कला; फिल्मों की डबिंग, सिनेमा एवं साहित्य की भाषा में अन्तर तथाअभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मर्यादा के प्रश्नों का अध्ययन कर सकेंगे।

उपलब्धियां – Course Outcome (COs)

CO1.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीहिन्दी सिनेमा के उद्भव और विकास तथाउसकेविविध आयाम, कला फिल्मों एवं व्यावसायिक फिल्मों में अन्तर, सिनेमा और साहित्य में अन्तर तथा पारस्परिक सम्बन्ध, हिन्दी सिनेमा के विकास में हिन्दी के साहित्यकारों के योगदान तथा हिन्दी सिनेमा और हिन्दी साहित्य के अन्तःसम्बन्धोंसे परिचित हुए।
CO2.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों ने हिंदी की साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम', 'शतरंज के खिलाड़ी' और'रजनीगन्धा' जैसी साहित्यिक कृतियों कासमीक्षात्मक अध्ययन किया।
CO3.इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थीहिन्दी साहित्य और फ़िल्मी गीतों के सम्बन्ध तथा उनके साहित्यिक महत्व से परिचित हुए, साथ हीहिन्दी के साहित्यिक गीतों का हिन्दी फ़िल्मों पर प्रभाव तथा हिन्दी फ़िल्मी गीतों कीलोकप्रियता काभीअध्ययन किया।

CO4.विद्यार्थियों ने हिंदी कथा एवं पटकथा के स्वरूप और लेखन-कला, कथा के पटकथा में रूपान्तरण की कला; फिल्मों की डबिंग, सिनेमा एवं साहित्य की भाषा में अन्तर एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मर्यादा के प्रश्नों का अध्ययन किया।

इकाई	**विषय**	**संवाद-अवधि** (घंटों में)	**उपलब्धियाँ(Course Outcome)**
1	हिन्दी सिनेमा का उद्भव और विकास, हिन्दी सिनेमा के विविध आयाम, कला फिल्मों एवं व्यावसायिक फिल्मों में अन्तर, सिनेमा और साहित्य में अन्तर तथा पारस्परिक सम्बन्ध, हिन्दी सिनेमा के विकास में हिन्दी के साहित्यकारों का योगदान, हिन्दी सिनेमा और हिन्दी साहित्य का अन्तःसम्बन्ध।	30	C1
2	निम्नलिखित साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों का समीक्षात्मक अध्ययन: 1. तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम 2. शतरंज के खिलाड़ी 3. रजनीगन्धा	30	C2
3	हिन्दी साहित्य और फ़िल्मी गीत,हिंदी फ़िल्मी गीतों का साहित्यिक महत्व, हिन्दी के साहित्यिक गीतों का हिन्दी फ़िल्मों पर प्रभाव,फिल्मी गीत और हिन्दी-उर्दू के साहित्यकार,हिन्दी लोकगीतों का फिल्मी गीतों पर प्रभाव,फ़िल्मी गीतों का हिन्दी लोकगीतों पर प्रभाव, हिन्दी फ़िल्मी गीतों कीलोकप्रियता।	30	C3
4	हिंदी कथा एवं पटकथा : स्वरूप एवं लेखन-कला, कथा के पटकथा में रूपान्तरण की कला; फिल्मों की डबिंग, सिनेमा एवं साहित्य की भाषा में अन्तर, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मर्यादा के प्रश्न।	30	C4
कुल संवाद-अवधि		**120**	

	PO1	PO2	PO3	PO4	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5
CO1	1	2	2	3	1	2	1	3	2
CO2	3	2	2	3	1	2	1	3	2
CO3	3	2	3	2	2	3	1	3	2
CO4	3	2	2	3	2	2	2	3	2

Average	2.50	2	2.25	2.75	1.50	2.25	1.25	3	2

कार्य-सम्पादन- पद्धति : व्याख्यान, विचार-विमर्श, समूह-चर्चा, सामग्री-समीक्षा और प्रस्तुतीकरण आदि।

निर्देशः

1. प्रत्येक इकाई से दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके विकल्प भी होंगे। 15×4=60

2. प्रत्येक इकाई से टिप्पणी पूछी जायेगी, जिसके विकल्प भी होंगे। 5×4=20

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी सिनेमा : कल, आज और कल - विनोद भारद्वाज, वीवी प्रकाशन, दिल्ली।
2. सिनेमा की सोच – अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. सिनेमा और संस्कृति – राही मासूम रजा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. पटकथा – मन्नू भण्डारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
5. पटकथा लेखन – असगर वजाहत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।